

# VAID ICS LUCKNOW

यूपीएससी / यूपी पीसीएस  
(प्रीलिम्स परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण करेंट अफेयर्स)

सितम्बर, 2024



B-36, SECTOR-C, ALIGANJ, LUCKNOW-226024

क्र सं. टॉपिक	पृष्ठ सं.	क्रम सं. टॉपिक	पृष्ठ सं.
1. गैलाथिया खाड़ी - ग्रेट निकोबार द्वीप	1	प्रारंभिक परीक्षा के लिए तथ्य	
2. एमपॉक्स / मंकीपॉक्स	2	1. सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक	40
3. गोड्डा परियोजना	3	2. ग्रीन टग ट्रांजिशन प्रोग्राम (GTP)	41
4. (VOGSS) 2024	4	3. टील कार्बन	42
5. विस्फोटक अधिनियम, 1884	5	4. इंडस-एक्स शिखर सम्मेलन 2024	42
6. स्वच्छ भारत पर नेचर जर्नल की रिपोर्ट	6	5. ईएलआई योजना	43
7. स्वच्छ वायु सर्वेक्षण पुरस्कार, 2024	7	6. इंडो-पैसिफिक आर्थिक ढांचा	44
8. स्वभाव स्वच्छता संस्कार स्वच्छता (4S)	7	7. तृष्णा मिशन	45
9. प्रोजेक्ट स्ट्रॉबेरी /ओपनएआई ओ1	9	8. गार्पिया-3 (G3)	46
10. पोर्ट ब्लेयर का नाम "श्री विजया पुरम"	9	9. फिलाडेल्फिया कॉरिडोर	46
11. मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल: जलवायु कार्रवाई को आगे बढ़ाना	11		
12. ऑपरेशन सद्भाव/टाइफून यागी	13		
13. सॉफ्ट लैंडिंग / हार्ड लैंडिंग	14		
14. भारतीय संविधान का अनुच्छेद 172(2)(बी)	15		
15. प्रेसिजन फ़ार्मिंग	16		
16. सापेक्ष आर्थिक प्रदर्शन: रिपोर्ट	18		
17. श्वेत पत्र क्या है?	19		
18. COP29 : जलवायु कार्रवाई निधि	20		
19. शहरी खेती/शहरी कृषि	21		
20. प्रोजेक्ट 200	23		
21. संधारणीय विमानन ईंधन (SAF)	25		
22. श्रम बल सर्वेक्षण वार्षिक रिपोर्ट-2024	26		
23. भविष्य के लिए समझौता: संयुक्त राष्ट्र	27		
24. असम समझौता : खंड 6	29		
25. खनिज सुरक्षा वित्त नेटवर्क	30		
26. हीट डोम प्रभाव	31		
27. एल-69 और सी-10 राष्ट्र समूह	33		
28. विस्तारित निधि सुविधा	34		
29. केफ़ियेह क्या है?	35		
30.. जल सहेली	36		
31. राइनो की स्थिति 2024 : रिपोर्ट	37		
32. एशिया पावर इंडेक्स 2024	38		

## गैलाथिया खाड़ी - ग्रेट निकोबार द्वीप

**चर्चा में क्यों ?** ग्रेट निकोबार द्वीप के गैलाथिया खाड़ी में एक वन्यजीव अभयारण्य को ट्रांसशिपमेंट पोर्ट परियोजना के लिए रास्ता साफ करने के लिए विमुक्त किया गया था। यह क्षेत्र, विशाल चमड़े के कछुए जैसी लुप्तप्राय प्रजातियों के लिए एक महत्वपूर्ण घोंसला बनाने वाला स्थान है, जिसे मूल रूप से CRZ-1A क्षेत्र के रूप में वर्गीकृत किया गया था, जहाँ बड़ी निर्माण परियोजनाएँ प्रतिबंधित हैं।

- भारत में तटीय विनियमन क्षेत्र (CRZ) वर्गीकरण पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 के तहत जारी तटीय विनियमन क्षेत्र अधिसूचना का हिस्सा है। CRZ वर्गीकरण तटीय पर्यावरण की रक्षा के लिए डिज़ाइन किया गया है जबकि सतत विकास की अनुमति देता है।

### CRZ वर्गीकरण:

#### • CRZ-I: पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र:

- **परिभाषा:** वे क्षेत्र जो पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील और कमजोर हैं, जैसे मैंग्रोव, प्रवाल भित्तियाँ, नमक दलदल और कछुए के घोंसले के स्थान।
- **प्रतिबंध:** इन क्षेत्रों में उनके पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने के लिए विकास पर सख्त नियम लगाए गए हैं।
- **उदाहरण:**
- **सुंदरबन (पश्चिम बंगाल):** अपने मैंग्रोव वनों और अद्वितीय जैव विविधता के लिए जाना जाता है।
- **गहिरमाथा समुद्री अभयारण्य (ओडिशा):** जैतून रिडले समुद्री कछुए के घोंसले के लिए महत्वपूर्ण है।

#### • सीआरजेड-II: विकसित क्षेत्र:

- **परिभाषा:** वे क्षेत्र जो पहले से ही विकसित हैं या विकास के लिए नामित हैं, जिनमें शहरी क्षेत्र और ऐसे क्षेत्र शामिल हैं जहाँ पहले से ही बुनियादी ढाँचा स्थापित है।
- **प्रतिबंध:** विकास की अनुमति शर्तों के साथ दी जाती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह तटीय पर्यावरण को प्रतिकूल रूप से प्रभावित न करे। सीआरजेड-I की तुलना में विनियमन कम कड़े हैं।
- **उदाहरण:**
- **मुंबई (महाराष्ट्र):** व्यापक तटीय विकास वाला घनी आबादी वाला शहरी क्षेत्र।
- **चेन्नई (तमिलनाडु):** मौजूदा बुनियादी ढाँचे वाले शहरी तटीय क्षेत्र का एक उदाहरण।

#### • सीआरजेड-III: ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्र:

- **परिभाषा:** वे क्षेत्र जो बड़े पैमाने पर ग्रामीण या अर्ध-शहरी हैं, जिनकी विशेषता आमतौर पर कम जनसंख्या घनत्व और सीमित विकास है।
- **प्रतिबंध:** तटीय पर्यावरण पर प्रभाव को कम करने के लिए शर्तों के अधीन विकास की अनुमति दी जाती है। प्रतिबंधों में उच्च ज्वार रेखा से बफर ज़ोन बनाए रखना शामिल है।
- **उदाहरण:**
- **कोच्चि (केरल):** विकसित और ग्रामीण विशेषताओं के मिश्रण वाले अर्ध-शहरी क्षेत्र।
- **पांडिचेरी (केंद्र शासित प्रदेश):** ग्रामीण और अर्ध-शहरी परिवेश के मिश्रण वाले तटीय क्षेत्र।

- **सीआरजेड-IV: तटीय जल:**

- **परिभाषा:** तटीय जल में क्षेत्र, जिसमें आधार रेखा से 12 समुद्री मील तक प्रादेशिक जल शामिल है।
- **प्रतिबंध:** इस क्षेत्र में समुद्र और उसके आस-पास के जल निकाय शामिल हैं, जहाँ नियम समुद्री जीवन और तटीय पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करने वाली गतिविधियों को नियंत्रित करने पर केंद्रित हैं।
- **उदाहरण:**
- **गोवा का तटीय जल:** इसमें मछली पकड़ने के उद्योग और समुद्री जैव विविधता के लिए महत्वपूर्ण समुद्री क्षेत्र शामिल हैं।
- **अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का जल:** अद्वितीय समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

## एमपॉक्स / मंकीपॉक्स

**चर्चा में क्यों ?** एमपॉक्स, जिसे पहले मंकीपॉक्स के नाम से जाना जाता था, कई देशों में इसके उभरने के कारण चर्चा में रहा है, जो ज्यादातर कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य और पड़ोसी देशों को प्रभावित करता है।

### एमपॉक्स क्या है?

- एमपॉक्स एक वायरल संक्रमण है जो ऑर्थोपॉक्सवायरस जीनस के सदस्य एमपॉक्स वायरस के कारण होता है, जिसमें वैरियोला वायरस (जो चेचक का कारण बनता है) और वैक्सीनिया वायरस (चेचक के टीकों में इस्तेमाल किया जाता है) भी शामिल हैं। एमपॉक्स में चेचक के समान लक्षण होते हैं, लेकिन आम तौर पर कम गंभीर होते हैं।

### इतिहास:

- **सबसे पहले पहचाना गया:** एमपॉक्स की पहचान सबसे पहले 1958 में प्रयोगशाला के बंदरों में की गई थी, इसलिए इसका नाम रखा गया। पहला मानव मामला 1970 में कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (DRC) में रिपोर्ट किया गया था।
- **स्थानिक क्षेत्र:** परंपरागत रूप से, एमपॉक्स को मध्य और पश्चिम अफ्रीका में स्थानिक माना जाता था, इन क्षेत्रों में समय-समय पर प्रकोप होता रहता था।
- **वैश्विक प्रसार:** 2022 में, एक महत्वपूर्ण वैश्विक प्रकोप हुआ, जिसमें यूरोप, उत्तरी अमेरिका और एशिया के कुछ हिस्सों सहित पारंपरिक स्थानिक क्षेत्रों के बाहर के देशों में मामले सामने आए। इस प्रसार ने अंतर्राष्ट्रीय चिंता और वैश्विक स्वास्थ्य प्रतिक्रिया को बढ़ा दिया।

### लक्षण:

Mpox के लक्षण चेचक के समान हैं, लेकिन आमतौर पर हल्के होते हैं। उनमें शामिल हैं:

- बुखार
- सिरदर्द
- मांसपेशियों में दर्द
- पीठ दर्द
- सूजे हुए लिम्फ नोड्स

- ठंड लगना
- थकावट
- एक दाने जो आमतौर पर चेहरे पर शुरू होता है और फिर शरीर के अन्य हिस्सों में फैल जाता है

### वेरिएंट:

Mpox के अलग-अलग जेनेटिक क्लैड या वेरिएंट हैं। दो प्राथमिक क्लैड हैं:

1. **मध्य अफ्रीकी (कांगो बेसिन) क्लैड:** आम तौर पर अधिक गंभीर और मृत्यु दर अधिक होती है।
2. **पश्चिम अफ्रीकी क्लैड:** आम तौर पर हल्के और मृत्यु दर कम होती है।

2022 के प्रकोप ने नए क्षेत्रों में दोनों क्लैड की उपस्थिति को उजागर किया, जिससे प्रतिक्रिया प्रयासों में जटिलता बढ़ गई।

### टीकाकरण:

वर्तमान में चेचक और एमपॉक्स के लिए इस्तेमाल किए जा रहे दो टीके (जेवाईएनएनईओएस वैक्सीन और एसीएम2000) डब्ल्यूएचओ के टीकाकरण पर विशेषज्ञों के रणनीतिक सलाहकार समूह द्वारा अनुशंसित हैं।

## गोड्डा परियोजना

**चर्चा में क्यों ?** भारत ने अगस्त 2024 में दूसरे देशों को बिजली निर्यात करने के अपने नियमों में बदलाव किए हैं। ये बदलाव भारतीय कंपनियों को बांग्लादेश जैसे देशों में राजनीतिक जोखिम से बचाने के लिए किए गए हैं।

### गोड्डा परियोजना क्या है?

- अडानी पावर **झारखंड के गोड्डा** में एक बहुत बड़ा बिजली संयंत्र चलाता है, जो 1,496 मेगावाट (MW) बिजली का उत्पादन कर सकता है। बिजली की यह पूरी मात्रा बांग्लादेश भेजी जाती है।
- यह परियोजना 2017 में शुरू हुई थी जब अडानी पावर ने बांग्लादेश पावर डेवलपमेंट बोर्ड (BPDB) के साथ 25 साल का समझौता किया था।
- **पावर परचेज एग्रीमेंट (PPA)** नामक यह समझौता भारत की पहली परियोजना है जो सीमा पार दूसरे देश को बिजली भेजती है।

### पावर परचेज एग्रीमेंट (PPA) क्या है?

- पावर परचेज एग्रीमेंट (PPA) बिजली उत्पादक और ग्राहक के बीच एक दीर्घकालिक अनुबंध है जो बिजली की खरीद के लिए शर्तों को परिभाषित करता है।
- पीपीए का इस्तेमाल कई तरह की स्थितियों में किया जा सकता है, जैसे कि जब कोई ग्राहक बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित करना चाहता है, या जब कोई अक्षय ऊर्जा परियोजना कीमत और मात्रा की गारंटी के बिना व्यवहार्य नहीं हो सकती है।
- पीपीए बाजार मूल्य जोखिमों को कम करने, अक्षय ऊर्जा संयंत्रों के निर्माण और संचालन को वित्तपोषित करने और मौजूदा बिजली संयंत्रों के लिए अनुवर्ती वित्तपोषण सुनिश्चित करने में भी मदद कर सकते हैं।

## थर्ड वॉयस ऑफ द ग्लोबल साउथ समिट (VOGSS) 2024

**चर्चा में क्यों ?** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 17 अगस्त, 2024 को वर्चुअली आयोजित तीसरे वॉयस ऑफ द ग्लोबल साउथ समिट (VOGSS) के उद्घाटन सत्र को संबोधित किया।

### पीएम के संबोधन के मुख्य बिंदु:

- अपने संबोधन में पीएम मोदी ने युद्ध जैसी स्थितियों, **जलवायु परिवर्तन और खाद्य एवं ऊर्जा सुरक्षा** में संकटों से चिह्नित चुनौतीपूर्ण वैश्विक वातावरण पर प्रकाश डाला।
- उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मौजूदा वैश्विक शासन संरचनाएँ 21वीं सदी की **जटिलताओं को संबोधित करने के लिए अपर्याप्त हैं।**
- शिखर सम्मेलन का विषय, "**एक सतत भविष्य के लिए एक सशक्त वैश्विक दक्षिण**", विकासशील देशों के हितों की वकालत करने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
- पीएम मोदी ने वैश्विक दक्षिण से एकजुट होने और साझा चुनौतियों का समाधान करने के लिए अपनी सामूहिक आवाज़ को मजबूत करने का आग्रह किया।
- उन्होंने इन देशों के बीच व्यापार संवर्धन का समर्थन करने के लिए **\$2.5 मिलियन के कोष की स्थापना** और व्यापार नीति और वार्ता में क्षमता निर्माण के लिए अतिरिक्त \$1 मिलियन के कोष की घोषणा भी की।
- ग्लोबल साउथ में भारत का नेतृत्व प्रमुख रहा है, **खासकर जी20 की अध्यक्षता के दौरान**, जहां इसने अफ्रीकी संघ को जी20 के स्थायी सदस्य के रूप में शामिल करने की सफलतापूर्वक वकालत की। इस शिखर सम्मेलन ने वैश्विक मंच पर विकासशील देशों की अग्रणी आवाज़ के रूप में भारत की भूमिका को और मजबूत किया।

### ग्लोबल साउथ क्या है?

- "ग्लोबल साउथ" शब्द मुख्य रूप से **एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और ओशिनिया** में देशों के समूह को संदर्भित करता है, जो आम तौर पर "ग्लोबल नॉर्थ" की तुलना में अपने आर्थिक विकास के निचले स्तरों की विशेषता रखते हैं, जिसमें उत्तरी अमेरिका, यूरोप और पूर्वी एशिया के कुछ हिस्से के समृद्ध और अधिक विकसित देश शामिल हैं।
- ग्लोबल साउथ में वे राष्ट्र शामिल हैं जो गरीबी, आर्थिक निर्भरता और राजनीतिक अस्थिरता जैसी आम चुनौतियों का सामना करते हैं, जो अक्सर अधिक विकसित देशों द्वारा ऐतिहासिक और चल रहे शोषण के कारण होते हैं।
- यह शब्द ग्लोबल नॉर्थ के विपरीत है, जिसमें संयुक्त राज्य **अमेरिका, कनाडा, यूरोपीय राष्ट्र, जापान, दक्षिण कोरिया और ऑस्ट्रेलिया** जैसे देश शामिल हैं, जो वैश्विक आर्थिक और राजनीतिक प्रणालियों पर हावी हैं।

## विस्फोटक अधिनियम, 1884

**चर्चा में क्यों?** 9 सितंबर, 2024 की रात को कालिंदी एक्सप्रेस को जानबूझकर पटरी से उतारने की कोशिश की गई थी। इस मामले में भारतीय न्याय संहिता की धारा 287,125 और विस्फोटक अधिनियम, 1884 के प्रावधानों के तहत कुछ अज्ञात लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है।

### विस्फोटक अधिनियम, 1884 के बारे में:

- विस्फोटक अधिनियम 1884 भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार द्वारा बनाया गया एक कानून है, जिसका मुख्य उद्देश्य विस्फोटकों के निर्माण, भंडारण, कब्जे, उपयोग, बिक्री, आयात और निर्यात को विनियमित करना है। तकनीकी प्रगति और बदलते सुरक्षा मानकों को समायोजित करने के लिए अधिनियम में बाद में कई बार संशोधन किया गया।
- विस्फोटक अधिनियम 1884** नामित अधिकारियों को सुरक्षा नियमों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए विस्फोटकों के भंडारण या उपयोग किए जाने वाले परिसर का निरीक्षण करने का अधिकार देता है। यह अधिनियम के उल्लंघन के लिए दंड की रूपरेखा भी तैयार करता है, जिसमें जुर्माना और कारावास शामिल हो सकता है।
- यह अधिनियम विभिन्न प्रकार के विस्फोटकों पर लागू होता है, जिसमें **बारूद, डायनामाइट, नाइट्रोग्लिसरीन और इसी तरह के अन्य पदार्थ शामिल हैं**। यह विस्फोटकों से संबंधित दुर्घटनाओं और दुर्घटनाओं को रोकने के लिए सुरक्षा मानकों और प्रक्रियाओं को निर्धारित करता है। इसमें दुर्घटनाओं के जोखिम को कम करने के लिए विस्फोटकों के संचालन, परिवहन और भंडारण के लिए दिशानिर्देश शामिल हैं।

पिछले कुछ वर्षों में, उभरती चुनौतियों और तकनीकी प्रगति को संबोधित करने के लिए विस्फोटक अधिनियम में संशोधन किया गया है। ये संशोधन अक्सर सुरक्षा मानकों को बढ़ाने, नियामक तंत्र में सुधार करने और नए प्रकार के विस्फोटकों को शामिल करने के लिए परिभाषाओं को अद्यतन करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

### मसौदा विस्फोटक विधेयक, 2024 के बारे में:

- सरकार विस्फोटक अधिनियम, 1884** के प्रतिस्थापन के रूप में मसौदा विस्फोटक विधेयक, 2024 को पेश करने की योजना बना रही है, जिसे रद्द करने का लक्ष्य है।
- सार्वजनिक परामर्श के लिए खुले एक दस्तावेज़ में एक रिपोर्ट के अनुसार, **उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT)** ने विनियमों के उल्लंघन के लिए जुर्माना बढ़ाने और लाइसेंसिंग प्रक्रियाओं की दक्षता बढ़ाने का प्रस्ताव दिया है।
- विस्फोटकों में **बारूद, नाइट्रोग्लिसरीन, नाइट्रोग्लाइकोल, डाइनाइटोटोल्यूइन और पिक्रिक एसिड** शामिल हैं।
- प्रस्तावित विस्फोटक विधेयक 2024 के अनुसार, केंद्र सरकार लाइसेंस देने, निलंबित करने या रद्द करने के साथ-साथ नए कानून के तहत अन्य निर्दिष्ट कार्यों को करने के लिए जिम्मेदार प्राधिकरण को नामित करेगी।
- वर्तमान में, DPIIT के तहत संचालित **पेट्रोलियम और विस्फोटक सुरक्षा संगठन (PESO)** किसी भी विस्फोटक सामग्री के निर्माण, कब्जे, उपयोग, बिक्री, आयात और निर्यात के लिए लाइसेंस जारी करने के लिए जिम्मेदार नियामक निकाय है।

- प्रस्तावित विधेयक यह भी सुझाव देता है कि लाइसेंसिंग प्राधिकरण लाइसेंस में विस्फोटकों की मात्रा निर्दिष्ट करेगा जिसे लाइसेंसधारी एक निर्दिष्ट अवधि के लिए, निर्धारित अनुसार, निर्माण, कब्जा, बिक्री, परिवहन, आयात या निर्यात कर सकता है।
- मसौदा विधेयक के प्रावधानों के तहत, यदि कोई लाइसेंसधारी किसी भी नियम का उल्लंघन करते हुए विनिर्माण, आयात या निर्यात में संलग्न है, तो उसे तीन साल तक की कैद, **1,00,000 रुपये का जुर्माना या दोनों का सामना करना पड़ सकता है**। इसके विपरीत, मौजूदा विस्फोटक अधिनियम में ऐसे उल्लंघनों के लिए तीन साल की जेल और **50,000 रुपये के जुर्माने का प्रावधान है**।

नए विधेयक के प्रावधानों के तहत, यदि कोई व्यक्ति नियमों का उल्लंघन करते हुए किसी विस्फोटक को अपने कब्जे में रखता, उसका उपयोग करता, बेचता या परिवहन करता पाया जाता है, तो उसे दो साल तक की कैद, 50,000 रुपये का जुर्माना या दोनों का सामना करना पड़ सकता है। मौजूदा कानून में जुर्माना 3,000 रुपये है।

#### पेट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन (PESO) के बारे में:

- यह वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग (DIPP) के अंतर्गत एक संगठन है।
- यह भारत में विस्फोटकों एवं पेट्रोल स्टेशनों के उपयोग का प्रबंधन करता है।
- मुख्यालय: नागपुर, महाराष्ट्र।

### स्वच्छ भारत पर नेचर जर्नल की रिपोर्ट

**चर्चा में क्यों?** इंटरनेशनल फूड पॉलिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा नेचर जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन से पता चलता है कि स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम) ने स्वच्छता में सुधार करके शिशु मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी लाई है।

#### रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष:

- **शिशु और बाल मृत्यु दर:** स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम) के बाद की अवधि में शिशु और पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर में तेज़ी से कमी देखी गई।
- **शौचालय कवरेज:** एसबीएम के तहत 30% से अधिक शौचालय कवरेज वाले जिलों में शिशु मृत्यु दर (आईएमआर) में 5.3 की कमी और पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर (यू5एमआर) में **6.8 की कमी देखी गई**।
- **स्वास्थ्य परिणाम में सुधार:** एसबीएम कवरेज में वृद्धि के कारण प्रसवपूर्व देखभाल (एएनसी) और संस्थागत प्रसव जैसे स्वास्थ्य कार्यक्रमों का अधिक उपयोग हुआ।
- **डायरिया से होने वाली मौतों में कमी:** डब्ल्यूएचओ ने बताया कि स्वच्छता में सुधार के कारण 2014 की तुलना में 2019 में डायरिया से होने वाली मौतों में **300,000** की कमी आई।
- **बाल दुर्बलता:** गैर-ओडीएफ क्षेत्रों में बाल दुर्बलता की दर **58%** अधिक देखी गई (बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन)।
- **महिलाओं की सुरक्षा:** 93% महिलाओं ने बताया कि बेहतर स्वच्छता सुविधाओं के साथ घर पर वे अधिक सुरक्षित महसूस करती हैं (यूनिसेफ)।
- **शिक्षा:** खराब वाश सुविधाएं छात्रों की उपस्थिति और नामांकन में बाधा डालती हैं, खासकर लड़कियों के लिए।

## स्वच्छ वायु सर्वेक्षण पुरस्कार, 2024

**चर्चा में क्यों?** हाल ही में, केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री ने नीले आसमान के लिए स्वच्छ वायु के अंतर्राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर स्वच्छ वायु सर्वेक्षण पुरस्कार 2024 प्रदान किया।

**स्वच्छ वायु सर्वेक्षण पुरस्कार के बारे में:**

- यह पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEF&CC) द्वारा 130 NCAP शहरों में शहर कार्य योजना और वायु गुणवत्ता के तहत अनुमोदित गतिविधियों के कार्यान्वयन के आधार पर शहरों को रैंक करने की एक पहल है।
- सितंबर 2022 में, MoEF&CC ने राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (NCAP) के तहत 'स्वच्छ वायु सर्वेक्षण- शहरों की रैंकिंग' पर दिशानिर्देश जारी किए।
- स्वच्छ वायु सर्वेक्षण शुरू करने का उद्देश्य 2025-26 तक वायु प्रदूषण को 40% तक कम करने के लिए NCAP के हिस्से के रूप में तैयार की गई सिटी एक्शन प्लान को लागू करने के लिए देश के 130 शहरों को रैंकिंग देना है।

**उद्देश्य:**

- समाज के सभी वर्गों में जागरूकता पैदा करना
- नागरिकों को जोखिम के कारण होने वाले स्वास्थ्य प्रभावों के बारे में सूचित करना
- विभिन्न स्थानों/शहरों में वायु गुणवत्ता की स्थिति की तुलना करना
- एनसीएपी के लक्ष्य "सभी के लिए स्वच्छ वायु" को प्राप्त करना।

एनसीएपी के अंतर्गत आने वाले सभी 130 शहरों का मूल्यांकन शहरों/यूएलबी द्वारा रैंकिंग ढांचे के तहत प्रस्तुत की गई जानकारी के आधार पर किया जाता है, जो कि प्राण पोर्टल (एनसीएपी कार्यक्रम के तहत प्रगति को दर्शाने वाला डैशबोर्ड) पर उपलब्ध है।

**श्रेणी-1** (10 लाख से अधिक जनसंख्या) के तहत सूरत, जबलपुर और आगरा को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले एनसीएपी शहरों को स्वच्छ वायु सर्वेक्षण पुरस्कार 2024 प्रदान किए गए;

**श्रेणी-2** (3 से 10 लाख के बीच जनसंख्या) फिरोजाबाद, अमरावती और झांसी को; और

**श्रेणी-3** (3 लाख से कम जनसंख्या) रायबरेली, नलगोंडा और नालागढ़ को।

## गोल्डन सिटी क्लब/स्वभाव स्वच्छता संस्कार स्वच्छता (4S)

**चर्चा में क्यों?** सरकार अधिक राज्यों को सबसे स्वच्छ शहरों में शीर्ष स्थान प्राप्त करने का अवसर देने के लिए एक 'गोल्डन सिटी क्लब' स्थापित करेगी।

- इंदौर ने 2023 में लगातार **सातवें वर्ष भारत के सबसे स्वच्छ शहर का खिताब** जीता।
- सरकार का लक्ष्य 4S अभियान के दौरान 200,000 कठिन और गंदे स्थानों को साफ करना भी है, जो इस वर्ष स्वच्छ भारत मिशन का विषय है।

**स्वभाव स्वच्छता संस्कार स्वच्छता (4S) के बारे में:**

- स्वच्छ भारत मिशन (SBM) के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, सरकार ने 2024 के लिए एक केंद्रित अभियान की घोषणा की है, जिसका लक्ष्य पूरे भारत में लगभग **200,000 सबसे चुनौतीपूर्ण और गंदे स्थानों** से निपटना है।
- अभियान नामक यह नई पहल 17 सितंबर से 2 अक्टूबर, 2024 तक चलेगी और मिशन की 10वीं वर्षगांठ मनाएगी।
- इस वर्ष का अभियान एक बड़ा कदम है, जो 'स्वच्छता ही सेवा है' पर पिछले फोकस से आगे बढ़कर '**स्वच्छता ही स्वभाव और संस्कार है**' की ओर बढ़ रहा है।
- अभियान स्वच्छता लक्ष्य इकाइयों (सीटीयू) पर ध्यान केंद्रित करेगा, जिसमें पर्यटक स्थल, सार्वजनिक भवन, वाणिज्यिक क्षेत्र और सामुदायिक शौचालय जैसे कठिन और गंदे स्थान शामिल हैं।
- केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों (पीएसयू), उद्योग भागीदारों और गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) को इन सीटीयू को अपनाने और साफ करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।
- इसका उद्देश्य सहयोगात्मक स्वच्छता अभियान और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से सार्वजनिक स्थानों को बेहतर बनाना है।
- शहरी क्षेत्रों में लगभग **2,300 डंपसाइट हैं, जिनमें लगभग 22 करोड़ मीट्रिक टन कचरा** है।
- अब तक **9 करोड़ मीट्रिक टन कचरे वाले 427 डंपसाइट** का उपचार किया गया है, जिससे 4,500 एकड़ भूमि को पुनः प्राप्त किया गया है। मिशन अब कचरा संग्रहण और प्रसंस्करण विधियों को बेहतर बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।
- अब **93% से अधिक महिलाओं के पास शौचालय** की सुविधा है और इस मिशन ने पिछले पाँच वर्षों में शिशु मृत्यु दर में लगभग तीन लाख की कमी लाने में योगदान दिया है।

**2024 का अभियान तीन मुख्य स्तंभों पर आधारित है:**

- 1. स्वच्छता की भागीदारी:** जन भागीदारी को प्रोत्साहित करना और स्वच्छता के बारे में जागरूकता बढ़ाना।
  - 2. संपूर्ण स्वच्छता:** सबसे चुनौतीपूर्ण और गंदे क्षेत्रों को लक्षित करके बड़े पैमाने पर सफाई अभियान चलाना।
  - 3. सफाई मित्र सुरक्षा शिविर:** स्वास्थ्य शिविर और मान्यता कार्यक्रमों सहित सफाई कर्मचारियों के लिए सुरक्षा और कल्याण सेवाएँ प्रदान करना।
- अभियान नागरिकों, व्यवसायों, गैर सरकारी संगठनों और स्थानीय निकायों को शामिल करते हुए 'संपूर्ण समाज' दृष्टिकोण को अपनाता है। यह सभी राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों और केंद्रीय मंत्रालयों की भागीदारी के साथ 'समाज के सभी' दृष्टिकोण को भी अपनाता है।
  - अभियान का समापन 2 अक्टूबर को महात्मा गांधी की जयंती पर होगा, जो स्वच्छ भारत मिशन के तहत परिवर्तनकारी प्रयासों के एक दशक का प्रतीक है।

## प्रोजेक्ट स्ट्रॉबेरी /ओपनएआई ओ1

**चर्चा में क्यों?** ओपनएआई के प्रोजेक्ट स्ट्रॉबेरी को अब आधिकारिक तौर पर ओपनएआई ओ1 कहा जाता है। 12 सितंबर को, कंपनी ने नए एआई मॉडल का पूरी तरह से अनावरण किया जो प्रतिक्रिया देने से पहले सोचता है। ओपनएआई के अनुसार, मॉडल जटिल कार्यों के माध्यम से तर्क कर सकता है और विज्ञान, कोडिंग और गणित में पिछले मॉडलों की तुलना में कठिन समस्याओं को हल कर सकता है। हालांकि यह चैटजीपीटी में इस श्रृंखला का पहला है, ओपनएआई नियमित अपडेट और सुधार जोड़ने की उम्मीद करता है। लेकिन यह सब अधिक कीमत पर आता है।

### यह क्या है और यह कैसे काम करता है?

- ओपनएआई का ओ1 मॉडल एक महत्वपूर्ण कदम है। कंपनी के अनुसार, यह मॉडल मानव-जैसी एआई प्राप्त करने की दिशा में एक प्रगतिशील कदम है। यह प्रमुख क्षेत्रों में ठोस सुधारों को भी प्रदर्शित करता है, जैसे कोड बनाना और अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में अधिक दक्षता के साथ जटिल, बहु-चरणीय चुनौतियों से निपटना।
- ओपनएआई ने रिलीज में कहा कि उसने इन मॉडलों को प्रतिक्रिया देने से पहले समस्याओं के बारे में सोचने में अधिक समय बिताने के लिए प्रशिक्षित किया है, ठीक वैसे ही जैसे एक इंसान करता है।
- प्रशिक्षण के माध्यम से, इसने अपनी सोच प्रक्रिया को परिष्कृत करना, विभिन्न रणनीतियों को आजमाना और अपनी गलतियों को पहचानना सीखा। इसके अलावा, यह कहता है कि मॉडल गणित और कोडिंग में उत्कृष्ट है।
- वास्तव में, आगामी अपडेट में, OpenAI o1 भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान में चुनौतीपूर्ण बेंचमार्क कार्यों में पीएचडी छात्रों के समान प्रदर्शन करता है।

## पोर्ट ब्लेयर का नाम "श्री विजया पुरम"

**चर्चा में क्यों?** देश को औपनिवेशिक छापों से मुक्त करने के लिए, केंद्र सरकार ने केंद्र शासित प्रदेश अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्ट ब्लेयर का नाम बदलकर "श्री विजया पुरम" करने का फैसला किया है।

यह वह स्थान भी है जहाँ नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी ने पहली बार तिरंगा फहराया था और यह वह सेलुलर जेल भी है जहाँ वीर सावरकर जी और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने एक स्वतंत्र राष्ट्र के लिए संघर्ष किया था।

### पोर्ट ब्लेयर के बारे में मुख्य तथ्य:

- अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्ट ब्लेयर का इतिहास समृद्ध और जटिल है, जो उपनिवेशवाद, स्वदेशी संस्कृतियों और हिंद महासागर में इसके रणनीतिक स्थान से प्रभावित है। यहाँ इसके ऐतिहासिक विकास का अवलोकन दिया गया है:

**1. प्रारंभिक इतिहास:**

- अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, जिसमें वर्तमान पोर्ट ब्लेयर के आसपास का क्षेत्र भी शामिल है, बाहरी लोगों के आने से पहले हजारों वर्षों तक स्वदेशी जनजातियों द्वारा बसा हुआ था। ग्रेट अंडमानी, ऑगेस और जारवा जैसे इन स्वदेशी समूहों का बाहरी दुनिया से बहुत कम संपर्क था।
- अपने अलगाव और शत्रुतापूर्ण वातावरण के कारण, अंडमान द्वीप समूह को शुरुआती खोजकर्ताओं और औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा बड़े पैमाने पर टाला गया था।

**2. औपनिवेशिक काल और दंडात्मक बंदोबस्त:**

**1789 - पहला ब्रिटिश समझौता:** अंग्रेजों ने पहली बार 1789 में अंडमान द्वीप समूह में एक बस्ती स्थापित करने का प्रयास किया, जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के लेफ्टिनेंट **आर्चीबाल्ड ब्लेयर ने वर्तमान पोर्ट ब्लेयर** के करीब चैथम द्वीप पर एक दंडात्मक कॉलोनी की स्थापना की। एडमिरल **विलियम कॉर्नवॉलिस** के नाम पर इस बस्ती का नाम पोर्ट कॉर्नवॉलिस रखा गया, लेकिन अस्वस्थ परिस्थितियों और मलेरिया जैसी बीमारियों के कारण इसे 1796 में छोड़ दिया गया।

**1857 - पोर्ट ब्लेयर में दंडात्मक कॉलोनी की स्थापना:**

1857 के भारतीय विद्रोह (सिपाही विद्रोह) के बाद, अंग्रेजों ने भारतीय क्रांतिकारियों को कैद करने के लिए एक सुरक्षित स्थान की तलाश की। 1858 में, पोर्ट ब्लेयर के पास रॉस द्वीप पर एक दंडात्मक बस्ती फिर से स्थापित की गई। इस बस्ती का विस्तार करके हजारों कैदियों को रखा गया, जिनमें कई स्वतंत्रता सेनानी और राजनीतिक कैदी शामिल थे।

**सेलुलर जेल (1906):** सेलुलर जेल, जिसे "काला पानी" के नाम से भी जाना जाता है, का निर्माण 1896 में शुरू हुआ और 1906 में पूरा हुआ।

- यह भारत के स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े राजनीतिक कैदियों को कैद करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक कुख्यात जेल बन गई। वीर सावरकर जैसे कई प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी यहाँ कैद थे।
- जेल का नाम और कठोर परिस्थितियों के लिए प्रतिष्ठा ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा सामना किए गए क्रूर दमन का प्रतीक है।

**3. जापानी कब्ज़ा (1942-1945):**

• द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पर 1942 से 1945 तक कुछ समय के लिए जापानी सेना का कब्ज़ा था। उन्होंने अंग्रेजों को बाहर कर दिया और द्वीपों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया।

• भारतीय राष्ट्रीय सेना (आईएनए) के नेता नेताजी **सुभाष चंद्र बोस ने 1943 में पोर्ट ब्लेयर** का दौरा किया और भारतीय ध्वज फहराया, जिससे द्वीपों को ब्रिटिश नियंत्रण से मुक्त होने वाला पहला क्षेत्र घोषित किया गया, हालांकि जापान ने सैन्य प्रभुत्व बनाए रखा।

जापानी कब्जे में स्थानीय आबादी के लिए कठोर परिस्थितियों की विशेषता थी, जिसमें यातना और जबरन श्रम शामिल था। 1945 में युद्ध समाप्त होने के बाद, द्वीप ब्रिटिश नियंत्रण में वापस आ गए।

**4. स्वतंत्रता के बाद का युग (1947-वर्तमान):**

- 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, पोर्ट ब्लेयर सहित अंडमान और निकोबार द्वीप समूह भारतीय संघ का हिस्सा बन गए।
- तब से पोर्ट ब्लेयर केंद्र शासित प्रदेश के प्रशासनिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ है, और हिंद महासागर में इसकी रणनीतिक स्थिति ने इसे भारत की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण बना दिया है। द्वीपों पर नौसैनिक अड्डे और अन्य सैन्य प्रतिष्ठान हैं।

**5. आधुनिक पोर्ट ब्लेयर:**

- आज, पोर्ट ब्लेयर एक हलचल भरा शहर है, जो अपने इतिहास, प्राकृतिक सुंदरता और द्वीप के पर्यटन उद्योग के प्रवेश द्वार के रूप में महत्व के लिए जाना जाता है। सेलुलर जेल को भारत के स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान का सम्मान करने के लिए एक राष्ट्रीय स्मारक में बदल दिया गया है, जो पर्यटकों और इतिहासकारों को समान रूप से आकर्षित करता है।
- यह शहर अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की प्राकृतिक सुंदरता की खोज करने का एक केंद्र भी है, जिसमें प्रवाल भित्तियाँ, समुद्र तट और जंगल शामिल हैं।

**पोर्ट ब्लेयर का ऐतिहासिक महत्व:**

**औपनिवेशिक और दंडात्मक इतिहास:** पोर्ट ब्लेयर का एक दंडात्मक उपनिवेश के रूप में महत्व, जहाँ भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों को कैद किया गया था, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के काले अध्यायों को उजागर करता है।

**सामरिक महत्व:** हिंद महासागर में इसकी रणनीतिक स्थिति ने इसे औपनिवेशिक शक्तियों के लिए एक सैन्य और व्यापार चौकी बना दिया और यह भारत की रक्षा के लिए इसे महत्वपूर्ण बनाता है।

**पोर्ट ब्लेयर में प्रमुख स्थल:**

**सेलुलर जेल (काला पानी):** भारत के स्वतंत्रता संग्राम का प्रतीक।

**रॉस द्वीप:** कभी अंडमान में अंग्रेजों का प्रशासनिक केंद्र था।

**चैथम द्वीप:** पहली ब्रिटिश बस्ती का स्थल।

**जापानी बंकर:** द्वितीय विश्व युद्ध के जापानी कब्जे के अवशेष।

**मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल: जलवायु कार्रवाई को आगे बढ़ाना**

**चर्चा में क्यों?** विश्व ओजोन दिवस 2024 पर, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) ने "मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल: जलवायु कार्रवाई को आगे बढ़ाना" विषय पर एक संवाद का आयोजन किया।

- विश्व ओजोन दिवस 16 सितंबर को मनाया जाता है।

**ओजोन दिवस का विषय:**

"मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल: जलवायु कार्रवाई को आगे बढ़ाना" जिसमें ओजोन परत की सुरक्षा और वैश्विक स्तर पर व्यापक जलवायु कार्रवाई पहलों को आगे बढ़ाने में मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाया गया है।

**उठाए गए कदम:**

- ओजोन परत के संरक्षण के लिए वियना कन्वेंशन (1985):
- उद्देश्य: ओजोन परत के क्षरण को संबोधित करने में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए एक रूपरेखा तैयार करना।
- अपनाया गया: 1985 में हस्ताक्षरित और 1988 में लागू हुआ।

**महत्व:** यह ओजोन परत की सुरक्षा की आवश्यकता को मान्यता देने वाला पहला वैश्विक समझौता था। कन्वेंशन में कानूनी रूप से बाध्यकारी कमी लक्ष्य शामिल नहीं हैं, लेकिन अनुसंधान, निगरानी और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है।

ओजोन परत को नष्ट करने वाले पदार्थों पर मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल (1987):

**उद्देश्य:** ओजोन परत को नष्ट करने वाले पदार्थों, जैसे क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसी), हैलोन और अन्य ओडीएस के उत्पादन और खपत को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करना।

**अंगीकरण:** 1987 में हस्ताक्षरित और 1989 में लागू हुआ। इसे कई बार संशोधित किया गया है (विशेष रूप से 1990, 1992, 1997, 1999 और 2016 में)।

**मुख्य विशेषताएं:**

कानूनी रूप से बाध्यकारी: प्रोटोकॉल ओडीएस के लिए विशिष्ट कमी लक्ष्य निर्धारित करता है, जिसे देशों को पूरा करना आवश्यक है।

**किगाली संशोधन (2016):**

एचएफसी का चरणबद्ध तरीके से खत्म होना: जबकि हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (एचएफसी) सीधे ओजोन परत को नष्ट नहीं करते हैं, वे शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस हैं। मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल में किगाली संशोधन एचएफसी में वैश्विक कमी को अनिवार्य बनाता है, जो जलवायु परिवर्तन को कम करेगा और ओजोन परत और वैश्विक तापमान दोनों की रक्षा करेगा।

जलवायु सह-लाभ: एचएफसी को चरणबद्ध तरीके से कम करके, देश जलवायु परिवर्तन को संबोधित कर रहे हैं। एचएफसी में कमी से 2100 तक वैश्विक तापमान में 0.4 डिग्री सेल्सियस तक की कमी आने की उम्मीद है।

## ऑपरेशन सद्दाव/टाइफून यागी

**चर्चा में क्यों?** भारत ने वियतनाम, लाओस और म्यांमार सहित टाइफून यागी से प्रभावित दक्षिण पूर्व एशियाई देशों को मानवीय सहायता प्रदान करने के लिए ऑपरेशन सद्दाव शुरू किया है।

### टाइफून यागी के बारे में:

- यह 1 सितंबर, 2024 को पश्चिमी फिलीपीन सागर में एक उष्णकटिबंधीय तूफान के रूप में शुरू हुआ।
- यागी, जिसका जापानी में अर्थ बकरी या मकर राशि है।
- यह फिलीपींस में पहुंचा, लेकिन दक्षिण चीन सागर में गर्म पानी के कारण फिर से तेज हो गया, 4 सितंबर तक श्रेणी 3 की हवाओं तक पहुंच गया।
- यागी 260 किमी प्रति घंटे की अधिकतम हवाओं के साथ श्रेणी 5 के टाइफून में और मजबूत हो गया, जिससे यह दक्षिण चीन सागर में दर्ज किए गए केवल चार श्रेणी 5 तूफानों में से एक बन गया।

### एशिया में अन्य प्रमुख चक्रवात:

#### चक्रवात अम्फान (2020):

**निर्माण:** मई 2020 में बंगाल की खाड़ी में बना।

**प्रभाव:** हाल के वर्षों में इस क्षेत्र में आने वाले सबसे शक्तिशाली चक्रवातों में से एक, अम्फान ने भारत और बांग्लादेश में व्यापक विनाश किया। इसने भारी बारिश, तेज़ हवाएँ और महत्वपूर्ण बाढ़ ला दी, जिसके परिणामस्वरूप बुनियादी ढाँचे और कृषि को व्यापक नुकसान पहुँचा।

#### चक्रवात ईदई (2019):

**गठन:** हिंद महासागर में विकसित हुआ और मार्च 2019 में मोज़ाम्बिक में आया।

**प्रभाव:** ईदई हाल के इतिहास में दक्षिणी अफ्रीका में आए सबसे विनाशकारी चक्रवातों में से एक था। इसने विनाशकारी बाढ़ का कारण बना, हज़ारों लोगों को विस्थापित किया और जान-माल का काफ़ी नुकसान हुआ।

#### चक्रवात हुदहुद (2014):

**गठन:** अक्टूबर 2014 में बंगाल की खाड़ी में उत्पन्न हुआ।

**प्रभाव:** हुदहुद ने भारत के पूर्वी तट पर हमला किया, जिसका असर खास तौर पर आंध्र प्रदेश और ओडिशा पर पड़ा। इसने काफ़ी नुकसान पहुँचाया, तेज़ हवाओं और भारी बारिश के कारण बाढ़ और बुनियादी ढाँचे को नुकसान पहुँचा।

#### चक्रवात नरगिस (2008):

**गठन:** बंगाल की खाड़ी में बना और मई 2008 में म्यांमार में आया।

**प्रभाव:** नरगिस म्यांमार में आए सबसे खतरनाक चक्रवातों में से एक था, जिसने व्यापक तबाही मचाई। चक्रवात के कारण हजारों लोगों की मौत हुई और बुनियादी ढांचे और कृषि भूमि को काफी नुकसान पहुंचा।

**टाइफून हैयान (योलांडा) (2013):**

**गठन:** नवंबर 2013 में पश्चिमी प्रशांत महासागर में विकसित हुआ।

## सॉफ्ट लैंडिंग / हार्ड लैंडिंग

**चर्चा में क्यों?** अमेरिकी उपभोक्ता और घर खरीदने वाले, व्यवसायी और राजनीतिक नेता महीनों से इस बात का इंतज़ार कर रहे हैं कि फेडरल रिजर्व इस सप्ताह क्या घोषणा करने वाला है: वह अपनी प्रमुख ब्याज दर को दो दशक के शिखर से कम कर रहा है।

**क्या फेडरल रिजर्व ब्याज दरों में इतनी तेज़ी से कटौती करेगा कि 'सॉफ्ट लैंडिंग' हो सके?**

### 1. सॉफ्ट लैंडिंग क्या है?

जब फेडरल रिजर्व मुद्रास्फीति के बारे में चिंतित होता है, तो वह आर्थिक विकास की गति को धीमा करने के लिए ब्याज दरें बढ़ाता है। यदि फेड ब्याज दरों में बहुत अधिक वृद्धि करता है, तो इससे मंदी आ सकती है - जिसे हार्ड लैंडिंग के रूप में जाना जाता है। हालाँकि, यदि फेड ब्याज दरों को केवल इतना बढ़ा सकता है कि अर्थव्यवस्था को धीमा कर सके और मंदी पैदा किए बिना मुद्रास्फीति को कम कर सके, तो उसने वह हासिल कर लिया है जिसे सॉफ्ट लैंडिंग के रूप में जाना जाता है।

### सॉफ्ट लैंडिंग:

- सॉफ्ट लैंडिंग तब होती है जब अर्थव्यवस्था मंदी में आए बिना तेज़ विकास या उच्च मुद्रास्फीति की अवधि के बाद धीमी हो जाती है।
- भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) या फेडरल रिजर्व (Fed) जैसे केंद्रीय बैंक मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने या ओवरहीटिंग को रोकने के लिए ब्याज दरें बढ़ाते हैं या मौद्रिक नीति को सख्त करते हैं।
- सॉफ्ट लैंडिंग में, आर्थिक वृद्धि धीमी हो जाती है, मुद्रास्फीति स्थिर हो जाती है, लेकिन बेरोजगारी अपेक्षाकृत कम रहती है, और उत्पादन में वृद्धि जारी रहती है, यद्यपि धीमी गति से। यह एक नाजुक संतुलनकारी कार्य है, जहाँ नीति समायोजन रोजगार या जीडीपी पर महत्वपूर्ण नकारात्मक प्रभाव डाले बिना मुद्रास्फीति और अधिकता को नियंत्रित करते हैं।

**सॉफ्ट लैंडिंग का उदाहरण:** 1990 के दशक के मध्य में अमेरिकी अर्थव्यवस्था को अक्सर एक उदाहरण के रूप में उद्धृत किया जाता है, जब फेडरल रिजर्व ने मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए ब्याज दरों में वृद्धि की, फिर भी अर्थव्यवस्था मंदी में प्रवेश किए बिना बढ़ती रही।

**2. हार्ड लैंडिंग:**

हार्ड लैंडिंग एक अधिक अचानक और गंभीर आर्थिक मंदी को संदर्भित करता है, जो अक्सर मंदी की ओर ले जाती है। यह तब होता है जब केंद्रीय बैंक मौद्रिक नीति को बहुत आक्रामक तरीके से सख्त करते हैं, जिससे आर्थिक गतिविधि में तेज संकुचन होता है। हार्ड लैंडिंग में जीडीपी में गिरावट, उच्च बेरोजगारी, उपभोक्ता मांग में गिरावट और अक्सर मंदी होती है। यह तब हो सकता है जब मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने या अत्यधिक वृद्धि को रोकने के उपाय बहुत मजबूत या गलत समय पर हों, जिससे आर्थिक गति में अचानक रुकावट आ सकती है।

**हार्ड लैंडिंग का उदाहरण:**

2008 के वैश्विक वित्तीय संकट में वित्तीय बाजारों के पतन के कारण कई अर्थव्यवस्थाओं को हार्ड लैंडिंग का सामना करना पड़ा, जिससे गंभीर आर्थिक मंदी आई।

**भारतीय संविधान का अनुच्छेद 172(2)(बी)**

**चर्चा में क्यों?** दिल्ली सरकार विधानसभा चुनाव समय से पहले कराना चाहती है।

**क्या कहता है कानून?**

- जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, **1950 की धारा 15(2)** कहती है कि विधानसभा के कार्यकाल की समाप्ति से कम से कम 6 महीने पहले चुनाव की अधिसूचना नहीं दी जा सकती, जब तक कि इसे अपना कार्यकाल पूरा होने से पहले भंग न कर दिया जाए।
- भारतीय संविधान का **अनुच्छेद 172(2)(बी)** राज्य विधानसभाओं के सदस्यों के कार्यकाल से संबंधित है और विशेष परिस्थितियों में उनके विस्तार के प्रावधानों से संबंधित है।

**अनुच्छेद 172(2)(बी) (अनुच्छेद 172 के संदर्भ में):**

- अनुच्छेद 172(1) निर्दिष्ट करता है कि राज्य विधानसभा का कार्यकाल इसकी पहली बैठक की तारीख से पांच वर्ष है, जब तक कि इसे पहले भंग न कर दिया जाए।
- **अनुच्छेद 172(2) असाधारण** स्थितियों में इस पांच साल के कार्यकाल के विस्तार का प्रावधान करता है, विशेष रूप से:
  - खंड (बी) संविधान के अनुच्छेद 352 के तहत घोषित राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान संसद द्वारा एक बार में एक वर्ष के लिए कार्यकाल बढ़ाने की अनुमति देता है। आपातकाल के प्रभावी रहने तक यह विस्तार जारी रह सकता है, लेकिन आपातकाल समाप्त होने के बाद यह छह महीने से अधिक नहीं हो सकता।

**अनुच्छेद 172(2)(बी) के मुख्य बिंदु:**

- विधानसभा के कार्यकाल का विस्तार: राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान विधान सभा का सामान्य पांच साल का कार्यकाल पांच साल से अधिक बढ़ाया जा सकता है।
- सीमाएँ: प्रत्येक विस्तार एक बार में केवल एक वर्ष के लिए हो सकता है।
- आपातकाल के बाद की सीमा: राष्ट्रीय आपातकाल समाप्त होने के बाद, विस्तार छह महीने से अधिक नहीं हो सकता।

**प्रेसिजन फ़ार्मिंग**

**चर्चा में क्यों?** भारत सरकार प्रेसिजन फ़ार्मिंग को बढ़ावा देने के लिए 6,000 करोड़ रुपये निवेश करने की योजना बना रही है। इसमें AI, IoT और ड्रोन जैसी स्मार्ट तकनीकें शामिल हैं, जो कृषि इनपुट को अनुकूलित करने और पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए उत्पादकता बढ़ाने के लिए हैं।

**प्रेसिजन फ़ार्मिंग के बारे में:**

प्रेसिजन फ़ार्मिंग (जिसे प्रेसिजन एग्रीकल्चर के नाम से भी जाना जाता है) एक आधुनिक कृषि तकनीक है, जो फ़सल उत्पादन और खेती के तरीकों को अनुकूलित करने के लिए उन्नत तकनीक और डेटा-संचालित दृष्टिकोणों का उपयोग करती है। प्रेसिजन फ़ार्मिंग का लक्ष्य खेत के भीतर अलग-अलग क्षेत्रों की विशिष्ट ज़रूरतों के आधार पर सटीक निर्णय लेकर दक्षता बढ़ाना, बर्बादी को कम करना और फ़सल की पैदावार में सुधार करना है।

**प्रेसिजन फ़ार्मिंग की मुख्य विशेषताएँ:****डेटा संग्रह:**

- प्रेसिजन फ़ार्मिंग उपग्रहों, सेंसर, ड्रोन, GPS सिस्टम और फ़ील्ड मॉनिटर जैसे विभिन्न स्रोतों से वास्तविक समय के डेटा को इकट्ठा करने पर निर्भर करती है।
- इस डेटा में मिट्टी की स्थिति, नमी का स्तर, फ़सल की सेहत और मौसम के पैटर्न शामिल हैं, जो खेत के पर्यावरण के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करते हैं।

**साइट-विशिष्ट प्रबंधन:**

- किसान बड़े खेतों में समान रूप से समान प्रथाओं को लागू करने के बजाय सूक्ष्म स्तर पर फ़सलों का प्रबंधन कर सकते हैं।
- इसमें विभिन्न क्षेत्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं के आधार पर पानी, उर्वरक, कीटनाशक और बीज जैसे इनपुट के परिवर्तनीय दर अनुप्रयोग शामिल हैं।

**प्रौद्योगिकी का उपयोग:**

- GPS-निर्देशित उपकरण सटीक रोपण, जुताई और कटाई में मदद करते हैं।

- फसल के स्वास्थ्य की निगरानी, बीमारियों का पता लगाने और पौधों की वृद्धि का आकलन करने के लिए रिमोट सेंसिंग और ड्रोन का उपयोग किया जाता है।
- IoT सेंसर को वास्तविक समय में मिट्टी की स्थिति, पानी के उपयोग और पौधों की ज़रूरतों की निगरानी करने के लिए खेतों में रखा जा सकता है।

#### निर्णय समर्थन प्रणाली:

- डेटा विश्लेषण और मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग परिणामों की भविष्यवाणी करने, जोखिमों का प्रबंधन करने और खेती की रणनीतियों को अनुकूलित करने के लिए किया जाता है।
- किसान रोपण के समय, सिंचाई कार्यक्रम, कीट नियंत्रण और कटाई के बारे में सूचित निर्णय ले सकते हैं।

#### सटीक खेती के लाभ:

- **उत्पादकता में वृद्धि:** सटीक खेती संसाधनों के उपयोग को अनुकूलित करने में मदद करती है, जिससे फसल की पैदावार बढ़ती है।
- **इनपुट लागत में कमी:** उर्वरकों, पानी और कीटनाशकों की सही मात्रा को केवल जहाँ ज़रूरत हो, वहाँ लगाने से इनपुट लागत कम हो जाती है।
- **स्थिरता:** सटीक खेती प्राकृतिक संसाधनों के कुशल उपयोग को बढ़ावा देती है, पर्यावरणीय प्रभाव को कम करती है और टिकाऊ कृषि प्रथाओं को प्रोत्साहित करती है।
- **न्यूनतम पर्यावरणीय पदचिह्न:** रसायनों और पानी का कम उपयोग प्रदूषण को कम करने और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में मदद करता है।
- **वास्तविक समय पर निगरानी:** फसलों और मिट्टी की निरंतर निगरानी से कीटों के संक्रमण या पोषक तत्वों की कमी जैसी समस्याओं का जल्द पता लगाया जा सकता है।

#### उठाए गए कदम:

- **राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (एनएमएसए) और प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीएमकेएसवाई),** जो जल-उपयोग दक्षता और मृदा स्वास्थ्य निगरानी पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- सरकार ने ड्रोन, मृदा स्वास्थ्य कार्ड और उपग्रह-आधारित निगरानी के उपयोग को भी बढ़ावा दिया है।
- सरकार ने कृषि के लिए एक **डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI)** की भी घोषणा की है जो किसानों को प्रौद्योगिकी और सूचना तक पहुँच प्रदान करेगी।
- देश में 22 परिशुद्ध कृषि विकास केंद्रों के माध्यम से PF तकनीक का विकास और प्रसार किया जा रहा है।
- कोविड-19 के दौरान शुरू किए गए **कृषि अवसंरचना कोष (AIF)** में स्मार्ट और परिशुद्ध कृषि के लिए अवसंरचना परियोजनाओं के वित्तपोषण के प्रावधान

**भारतीय राज्यों का सापेक्ष आर्थिक प्रदर्शन: रिपोर्ट -1960-61 से 2023-24:**

**चर्चा में क्यों?** इसे हाल ही में प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद (ईएसी-पीएम) द्वारा प्रस्तुत किया गया:

**प्रदर्शन रिपोर्ट के बारे में मुख्य तथ्य:**

- देश के पूर्वी हिस्से का विकास चिंता का विषय बना हुआ है।
- पश्चिम बंगाल को छोड़कर **समुद्री राज्यों ने स्पष्ट रूप से अन्य राज्यों से बेहतर प्रदर्शन** किया है।
- यद्यपि पिछले दो दशकों में बिहार की सापेक्ष स्थिति स्थिर हो गई है, लेकिन यह अन्य राज्यों से काफी पीछे है और इसे पकड़ने के लिए बहुत तेज़ विकास की आवश्यकता है।
- इसके विपरीत, ओडिशा, जो परंपरागत रूप से पिछड़ा हुआ है, ने हाल के वर्षों में उल्लेखनीय सुधार दिखाया है।
- "पश्चिम बंगाल, जो **1960-61 में 10.5 प्रतिशत** के साथ राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में तीसरा सबसे बड़ा हिस्सा रखता था, अब 2023-24 में केवल 5.6 प्रतिशत का हिस्सा है। इस पूरी अवधि में इसमें लगातार गिरावट देखी गई है।
- पश्चिम बंगाल की प्रति व्यक्ति आय **1960-61 में राष्ट्रीय औसत से ऊपर 127.5 प्रतिशत** थी, लेकिन इसकी वृद्धि राष्ट्रीय रुझानों के साथ तालमेल रखने में विफल रही। नतीजतन, इसकी सापेक्ष प्रति व्यक्ति आय **2023-24 में घटकर 83.7 प्रतिशत** हो गई, जो राजस्थान और **ओडिशा जैसे पारंपरिक रूप से पिछड़े राज्यों** से भी नीचे है।
- भारत के पश्चिमी और दक्षिणी क्षेत्रों ने **1960-61 से 2023-24 तक** देश के अन्य हिस्सों की तुलना में उल्लेखनीय रूप से बेहतर प्रदर्शन किया है।
- 1991 में आर्थिक उदारीकरण के बाद दक्षिणी राज्यों ने दूसरों को काफी पीछे छोड़ दिया है, जिसमें पांच राज्य - कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, केरल और तमिलनाडु - सामूहिक रूप से सबसे अधिक हैं। **2023-24 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 30 प्रतिशत**।
- "1991 से पहले, दक्षिणी राज्यों ने असाधारण प्रदर्शन नहीं दिखाया था। हालाँकि, **1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद से, दक्षिणी राज्य अग्रणी प्रदर्शन करने वाले राज्यों के रूप में उभरे हैं**।
- इसके अलावा, 1991 के बाद सभी दक्षिणी राज्यों की प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत से अधिक हो गई।
- शोधपत्र में यह भी उल्लेख किया गया है कि उत्तर में, दिल्ली और हरियाणा जैसे राज्य भी अलग-अलग हैं। "अध्ययन अवधि के दौरान दिल्ली की प्रति व्यक्ति आय सबसे अधिक रही।"
- शोधपत्र के अनुसार, **1960 के दशक में महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु** भारत के 3 सबसे बड़े औद्योगिक समूहों का घर थे।
- "इसके बाद उनकी किस्मत अलग-अलग हो गई- महाराष्ट्र ने पूरे समय स्थिर प्रदर्शन दिखाया, पश्चिम बंगाल की हिस्सेदारी लगातार घट रही है। गिरावट के बाद, **तमिलनाडु ने 1991 के बाद बढ़त हासिल की**।
- उपयोग किए गए सभी डेटा वर्तमान कीमतों में हैं और विश्लेषण **1960-61 से 2023-24 तक** फैला हुआ है, जो राष्ट्रीय और राज्य-विशिष्ट परिवर्तनों के जवाब में अलग-अलग राज्यों के प्रदर्शन के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

## श्वेत पत्र क्या है?

**चर्चा में क्यों?** दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने हाल ही में समाप्त हो चुकी आबकारी नीति पर श्वेत पत्र की मांग की है।

### श्वेत पत्र क्या है?

इसके विपरीत, श्वेत पत्र किसी विशिष्ट विषय या मुद्दे पर व्यापक जानकारी, विश्लेषण और प्रस्ताव प्रदान करता है। इसका उद्देश्य निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को सूचित करना, समाधान प्रस्तावित करना या कार्रवाई के लिए सिफारिशें प्रस्तुत करना है। इसे अक्सर सरकारें, संगठन या विशेषज्ञ नीति को आकार देने के लिए तैयार करते हैं।

- श्वेत पत्र नीति निर्माताओं, हितधारकों और जनता को सरकार की नीतियों, पहलों और अर्थव्यवस्था पर उनके इच्छित प्रभाव के बारे में सूचित करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में कार्य करता है। यह आर्थिक संकेतकों, सुधारों और विभिन्न क्षेत्रों के लिए उनके निहितार्थों का विस्तृत मूल्यांकन प्रदान करता है।

### श्वेत पत्र की विशेषताएँ:

- **व्यापक जानकारी:** किसी विशेष विषय, मुद्दे या नीति पर विस्तृत और व्यापक जानकारी प्रदान करता है।
- **वस्तुनिष्ठ स्वर:** एक वस्तुनिष्ठ और तटस्थ स्वर बनाए रखता है, बिना किसी मजबूत राय या पूर्वाग्रह के जानकारी और विश्लेषण प्रस्तुत करता है।
- **नीति अनुशंसाएँ:** इसमें गहन विश्लेषण और शोध के आधार पर नीति परिवर्तन, पहल या सुधारों के लिए प्रस्ताव या अनुशंसाएँ शामिल हो सकती हैं।
- **आधिकारिक स्रोत:** अक्सर तर्कों और सिफारिशों का समर्थन करने के लिए आधिकारिक स्रोतों, शोध निष्कर्षों और विशेषज्ञों की राय का हवाला देते हैं।
- **शैक्षिक और सूचनात्मक:** हितधारकों, नीति निर्माताओं और जनता को जटिल मुद्दों के बारे में शिक्षित करने का लक्ष्य, सूचित निर्णय लेने की सुविधा के लिए अंतर्दृष्टि और विश्लेषण प्रदान करना।

### ब्लैक पेपर क्या है?

एक ब्लैक पेपर किसी विशेष विषय, मुद्दे या नीति पर एक आलोचनात्मक या असहमतिपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह आलोचनात्मक विश्लेषण के माध्यम से प्रचलित आख्यानो, नीतियों या दृष्टिकोणों को चुनौती देता है, विवादास्पद विषयों को संबोधित करता है, साक्ष्य प्रदान करता है और वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तावित करता है।

### ब्लैक पेपर्स की विशेषताएँ:

- **आलोचनात्मक विश्लेषण:** इसमें मौजूदा नीतियों, प्रथाओं या दृष्टिकोणों का आलोचनात्मक विश्लेषण और मूल्यांकन शामिल है।
- **विरोधी रुख:** प्रचलित आख्यानो या दृष्टिकोणों को चुनौती देते हुए विरोध या असहमति व्यक्त करता है।
- **विवादास्पद विषय:** अक्सर विवादास्पद या विवादास्पद विषयों को संबोधित करते हुए वैकल्पिक दृष्टिकोण या व्याख्याएँ प्रस्तुत करते हैं।

- **साक्ष्य-आधारित तर्क:** आलोचनात्मक मूल्यांकन और दृष्टिकोण का समर्थन करने के लिए साक्ष्य, डेटा और तार्किक तर्कों पर निर्भर करता है।
- **परिवर्तन के लिए वकालत:** कथित कमियों या अन्याय को दूर करने के लिए नीतिगत परिवर्तनों, सुधारों या वैकल्पिक तरीकों की वकालत कर सकते हैं।

## COP29 : जलवायु कार्रवाई निधि

**चर्चा में क्यों?** COP29 के मेज़बान अज़रबैजान ने राष्ट्रों से 2022 के स्तर से वैश्विक ऊर्जा भंडारण क्षमता में छह गुना वृद्धि करने के लिए प्रतिबद्ध होने का आह्वान किया है, जिसका लक्ष्य 2030 तक 1,500 गीगावाट तक पहुंचना है।

- यह प्रस्ताव नवंबर में बाकू में होने वाले संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन से पहले राष्ट्रपति-पदनामित मुख्तार बाबायेव द्वारा सभी भाग लेने वाले देशों को लिखे गए पत्र में रेखांकित किया गया था।
- बाबायेव ने **जलवायु कार्रवाई निधि के निर्माण** का भी सुझाव दिया, जिसे जीवाश्म ईंधन उत्पादक देशों और कंपनियों से स्वैच्छिक योगदान के माध्यम से समर्थन दिया जाएगा।
- COP29 प्रेसीडेंसी ने कहा कि ये प्रतिज्ञाएँ और अन्य प्रतिबद्धताएँ एक गैर-बातचीत "कार्रवाई एजेंडा" के रूप में पैक की गई हैं, जो इस वर्ष के संयुक्त राष्ट्र जलवायु शिखर सम्मेलन में औपचारिक बातचीत किए गए एजेंडे का पूरक होंगी।
- ये गैर-बाध्यकारी प्रतिज्ञाएँ जलवायु परिवर्तन पर **संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC)** के तहत बातचीत किए गए औपचारिक समझौतों से अलग हैं, जिनके लिए व्यापक सहमति की आवश्यकता होती है।
- इस नवंबर में बाकू में होने वाले COP29 में, देशों को **नए सामूहिक परिमाणित लक्ष्य (NCQG)** पर एक समझौते पर पहुंचना होगा - यह वह नई राशि है जिसे विकसित देशों को 2025 से शुरू करके हर साल विकासशील देशों में जलवायु कार्रवाई का समर्थन करने के लिए जुटाना होगा।

### नए सामूहिक परिमाणित लक्ष्य (NCQG) के बारे में:

- यह पेरिस समझौते का एक **प्रमुख तत्व है, जिसे 2025** के बाद विकासशील देशों को उनके जलवायु कार्यों में सहायता करने के लिए एक नया वित्तीय लक्ष्य निर्धारित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- NCQG जलवायु वित्त में लगातार अंतराल को भरने का प्रयास करता है, **2009 में निर्धारित 100 बिलियन डॉलर** के लक्ष्य पर निर्माण करता है और अधिक यथार्थवादी और महत्वाकांक्षी वित्तीय ढांचा प्रदान करने का लक्ष्य रखता है।
- NCQG का उद्देश्य वैश्विक साझेदारी को बढ़ावा देना और राष्ट्रों के बीच विश्वास और सहयोग को बढ़ाना है, जो पेरिस समझौते को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए महत्वपूर्ण है।

### वैश्विक जलवायु कार्रवाई एजेंडा (GCAA) के बारे में:

- इसे वैश्विक जलवायु कार्रवाई के लिए माराकेच भागीदारी के रूप में भी जाना जाता है, इसकी स्थापना **2016 में माराकेच में COP22 (UNFCCC के पक्षकारों का 22वाँ सम्मेलन)** में की गई थी।

- माराकेच भागीदारी का उद्देश्य पेरिस समझौते के कार्यान्वयन का समर्थन करने और जलवायु कार्रवाई में तेजी लाने के लिए व्यवसायों, शहरों, क्षेत्रों, निवेशकों और नागरिक समाज सहित सरकारों और गैर-राज्य अभिनेताओं के बीच सहयोग को बढ़ाना है।

### माराकेच भागीदारी के मुख्य उद्देश्य:

जलवायु कार्रवाई को बढ़ाना: प्राथमिक लक्ष्य वैश्विक जलवायु लक्ष्यों, विशेष रूप से पेरिस समझौते के लक्ष्यों को प्राप्त करने के प्रयासों को बढ़ावा देना है, जिसमें वैश्विक तापमान को **2°C से नीचे सीमित करना और 1.5°C** के लिए प्रयास करना शामिल है।

- सरकारी और गैर-सरकारी कार्रवाई को जोड़ना: माराकेच भागीदारी जलवायु समाधानों को लागू करने में सरकारों के साथ काम करने के लिए विविध हितधारकों को एक साथ लाती है। यह सुनिश्चित करता है कि गैर-राज्य अभिनेता जलवायु लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँ।

**शमन, अनुकूलन और लचीलापन:** यह पहल शमन (ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना) और अनुकूलन (समुदायों और पारिस्थितिकी तंत्रों को जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने में मदद करना) दोनों में प्रयासों को बढ़ाने पर केंद्रित है, जबकि जलवायु प्रभावों के सामने लचीलापन को बढ़ावा देती है।

### क्षेत्रीय और विषयगत फोकस: साझेदारी प्रमुख क्षेत्रों के आसपास संरचित है जैसे:

- ऊर्जा
- उद्योग
- जल
- कृषि और खाद्य प्रणाली

**ट्रेकिंग और रिपोर्टिंग:** माराकेच भागीदारी जलवायु लक्ष्यों की दिशा में गैर-राज्य अभिनेताओं द्वारा प्रगति को ट्रैक करने में मदद करती है, NAZCA (जलवायु कार्रवाई के लिए गैर-राज्य अभिनेता क्षेत्र) पोर्टल जैसे प्लेटफार्मों के माध्यम से उनके योगदान की रिपोर्टिंग करती है। यह पारदर्शिता अभिनेताओं को जवाबदेह बनाए रखने और प्रभावी पहलों को प्रदर्शित करने में मदद करती है।

**वित्त को उत्प्रेरित करना:** यह जलवायु वित्त के जुटाव को भी बढ़ावा देता है, विशेष रूप से कमजोर और विकासशील देशों को उनके जलवायु लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता करने के लिए।

## शहरी खेती/शहरी कृषि

**चर्चा में क्यों?** इस शब्द का इस्तेमाल अक्सर समाचार पत्रों में किया जाता रहा है।

शहरी खेती, जिसे शहरी कृषि के रूप में भी जाना जाता है, शहरी क्षेत्रों में या उसके आसपास खाद्य पदार्थों की खेती, प्रसंस्करण और वितरण की प्रथा को संदर्भित करता है। इसमें शहर की सीमा के भीतर फल, सब्जियाँ, जड़ी-बूटियाँ उगाना और पशुधन पालन जैसी विभिन्न गतिविधियाँ शामिल हैं।

**भारत में, शहरी खेती ने कई कारकों के कारण हाल के वर्षों में महत्वपूर्ण गति प्राप्त की है:**

- **तेजी से शहरीकरण:** बढ़ती आबादी और बढ़ते शहरीकरण के साथ, शहरों के भीतर स्थायी खाद्य स्रोतों की आवश्यकता है।
- **खाद्य सुरक्षा:** शहरी खेती उपज के लंबी दूरी के परिवहन पर निर्भरता को कम करके खाद्य सुरक्षा चिंताओं को दूर करने में मदद कर सकती है।
- **पर्यावरणीय लाभ:** यह कार्बन उत्सर्जन को कम करके, पानी का संरक्षण करके और वायु गुणवत्ता में सुधार करके पर्यावरणीय स्थिरता में योगदान दे सकता है।
- **सामुदायिक जुड़ाव:** शहरी खेती परियोजनाएँ सामुदायिक भावना को बढ़ावा दे सकती हैं और लोगों को प्रकृति और एक-दूसरे से जुड़ने के अवसर प्रदान कर सकती हैं।

**भारत में शहरी खेती के उदाहरण:**

**छत पर उद्यान:** कई व्यक्ति और समुदाय सब्जियाँ, जड़ी-बूटियाँ और फूल उगाने के लिए छतों का उपयोग कर रहे हैं। सामुदायिक उद्यान: शहरी क्षेत्रों में साझा स्थानों को सामुदायिक उद्यानों में बदल दिया जाता है, जहाँ निवासी एक साथ फसल उगा सकते हैं।

**वर्टिकल फ़ार्मिंग:** सीमित स्थानों में उत्पादन को अधिकतम करने के लिए वर्टिकल फ़ार्मिंग जैसी नवीन तकनीकों की खोज की जा रही है।

**हाइड्रोपोनिक्स और एकापोनिक्स:** ये विधियाँ पौधों को उगाने के लिए क्रमशः पोषक तत्वों से भरपूर पानी और मछली के अपशिष्ट का उपयोग करती हैं, जो कुशल और टिकाऊ विकल्प प्रदान करती हैं।

**\*\*भारत में शहरी खेती का एक हालिया उदाहरण सरकार द्वारा शुरू की गई "अपना भोजन खुद उगाएँ" पहल है।**

- यह अभियान नागरिकों को खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए, विशेष रूप से COVID-19 महामारी के दौरान, अपना भोजन खुद उगाने के लिए प्रोत्साहित करता है। भारत में हाल के उदाहरण मुंबई के रूफटॉप फ़ार्म: मुंबई की कई इमारतों ने रूफटॉप फ़ार्मिंग पहल को अपनाया है।

उदाहरण के लिए, **ग्रो योर ओन फूड मूवमेंट** निवासियों को छतों पर अपनी सब्जियाँ उगाने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह पहल अन्य शहरी क्षेत्रों में फैल रही है, जो पारंपरिक बाजारों का विकल्प पेश करती है और खाद्य मुद्रास्फीति से निपटने में मदद करती है।

**दिल्ली की ऑर्गेनिक टेरेस गार्डनिंग:** दिल्ली में, व्यक्तियों और हाउसिंग सोसाइटियों ने ऑर्गेनिक सब्जियाँ उगाने के लिए टेरेस गार्डनिंग शुरू की है। एनजीओ और मिशन ऑर्गेनिक डेवलपमेंट जैसी सरकारी पहल शहरी निवासियों को प्रशिक्षण और बीज प्रदान करके इन प्रयासों का समर्थन करती हैं।

- केरल की **"हरिता नगरम" परियोजना:** केरल ने एक अनूठी शहरी खेती परियोजना, "हरिता नगरम" (हरित शहर) शुरू की, जिसमें लोगों को शहरी स्थानों में सब्जियाँ उगाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। राज्य सरकार ने शहरी घरों में हाइड्रोपोनिक्स और किचन गार्डनिंग के लिए सब्सिडी और मार्गदर्शन प्रदान किया।

**हैदराबाद की वर्टिकल फ़ार्मिंग परियोजनाएँ:** हैदराबाद में वर्टिकल फ़ार्मिंग जैसे नवाचार देखे गए हैं, जहाँ नियंत्रित वातावरण में ढेरों परतों में फसलें उगाई जाती हैं। यह विधि जगह और पानी बचाती है और उच्च घनत्व वाले शहरी क्षेत्रों के लिए आदर्श है।

भारत में शहरी खेती खाद्य सुरक्षा, पर्यावरणीय स्थिरता और सामुदायिक जुड़ाव की चुनौतियों का एक आशाजनक समाधान है। जैसे-जैसे शहर बढ़ते जा रहे हैं, यह अभ्यास शहरी जीवन के भविष्य को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की संभावना है।

## प्रोजेक्ट 200

**चर्चा में क्यों?** बेंगलुरु स्थित अंतरिक्ष क्षेत्र के एक स्टार्ट-अप ने हाल ही में एक अल्ट्रा लो अर्थ ऑर्बिट सैटेलाइट का अनावरण किया है, जो इन-हाउस विकसित प्रणोदन प्रणालियों की मदद से 200 किलोमीटर की ऊंचाई पर संचालित करने की क्षमता रखता है।

- **बेलाट्रिक्स एयरोस्पेस द्वारा विकसित उपग्रह प्रोजेक्ट 200** का अनावरण भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन और प्राधिकरण केंद्र (IN-SPACE) के अध्यक्ष पवन कुमार गोयनका ने किया।
- आमतौर पर, लो अर्थ ऑर्बिट उपग्रहों को वायुमंडलीय हस्तक्षेप के प्रभाव को कम करने के लिए 450 किलोमीटर की ऊंचाई पर तैनात किया जाता है। उपग्रहों को निचली कक्षाओं में रखने से वे वायुमंडलीय खिंचाव के कारण पृथ्वी की ओर तेजी से बढ़ सकते हैं।
- इससे उपग्रहों को ड्रैग के कारण कुछ दिनों में ही कक्षा से बाहर निकलने के बजाय वर्षों तक इस (200 किलोमीटर) कक्षा से संचालित करने की अनुमति मिलेगी।
- बेलाट्रिक्स पिछले चार वर्षों से **उपग्रहों को 200** किलोमीटर की कक्षाओं में रखने के लिए प्रणोदन तकनीक पर काम कर रहा है, जहां अंतरिक्ष यान का प्रदर्शन काफी बढ़ जाता है।
- कंपनी ने दावा किया कि 200 किलोमीटर की ऊंचाई पर, उपग्रह की क्षमता में उल्लेखनीय सुधार होगा क्योंकि संचार विलंबता आधी रह जाती है, छवि रिज़ॉल्यूशन तीन गुना बेहतर हो जाता है। 450 किलोमीटर की कक्षाओं में रखे गए अंतरिक्ष यान की तुलना में उपग्रह की लागत भी कम है।

### लो अर्थ ऑर्बिट (LEO) उपग्रहों के बारे में:

ऊंचाई: आमतौर पर पृथ्वी की सतह से 160 और 2,000 किलोमीटर ऊपर परिक्रमा करते हैं।

### विशेषताएँ:

- संकेत यात्रा की कम दूरी के कारण कम विलंबता।
- डेटा ट्रांसमिशन के लिए उच्च बैंडविड्थ।
- किसी विशिष्ट स्थान पर अधिक बार पास होना।
- वायुमंडलीय खिंचाव के कारण अधिक बार कक्षीय समायोजन की आवश्यकता होती है।

### अनुप्रयोग:

- ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (GPS):
- रिमोट सेंसिंग (पृथ्वी अवलोकन, मौसम निगरानी)
- संचार (मोबाइल फोन नेटवर्क, इंटरनेट कनेक्टिविटी)

- वैज्ञानिक अनुसंधान

#### हाई अर्थ ऑर्बिट (HEO) उपग्रहों के बारे में:

**ऊंचाई:** 35,786 किलोमीटर से अधिक ऊंचाई पर कक्षा, जिसमें जियोसिंक्रोनस ऑर्बिट (GEO) और जियोस्टेशनरी ऑर्बिट (GSO) शामिल हैं।

#### विशेषताएँ:

- लंबी परिक्रमा अवधि, जो अक्सर पृथ्वी के घूमने से मेल खाती है।
- पृथ्वी की सतह के सापेक्ष स्थिर स्थिति (GEO/GSO उपग्रहों के लिए)।
- पृथ्वी की सतह से अधिक दूरी के कारण उच्च सिग्नल शक्ति।
- LEO उपग्रहों की तुलना में कम बैंडविड्थ।

#### अनुप्रयोग:

- संचार (सैटेलाइट टीवी, रेडियो प्रसारण)
- मौसम पूर्वानुमान
- नेविगेशन
- वैज्ञानिक अनुसंधान

#### भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन और प्राधिकरण केंद्र (IN-SPACE) के बारे में:

यह भारत में अंतरिक्ष विभाग के तहत एक सरकारी एजेंसी है। इसकी स्थापना 2020 में भारत में निजी संस्थाओं की अंतरिक्ष गतिविधियों को बढ़ावा देने, सुविधा प्रदान करने और विनियमित करने के उद्देश्य से की गई थी।

#### IN-SPACE के प्रमुख कार्य:

**लाइसेंस प्रदान करना:** IN-SPACE विभिन्न अंतरिक्ष गतिविधियों, जैसे उपग्रहों को लॉन्च करना, अंतरिक्ष-आधारित सेवाएँ प्रदान करना और अंतरिक्ष अनुसंधान करने के लिए निजी संस्थाओं को लाइसेंस प्रदान करता है।

**मार्गदर्शन प्रदान करना:** एजेंसी नियामक ढांचे को नेविगेट करने और आवश्यक अनुमोदन प्राप्त करने में निजी संस्थाओं को मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करती है।

**निजी अंतरिक्ष उद्योग को बढ़ावा देना:** IN-SPACE भारत में निजी अंतरिक्ष उद्योग के विकास और विकास को सक्रिय रूप से बढ़ावा देता है, नवाचार और उद्यमशीलता को बढ़ावा देता है।

**सहयोग को सुविधाजनक बनाना:** यह अंतरिक्ष गतिविधियों में शामिल निजी संस्थाओं और सरकारी संगठनों के बीच सहयोग की सुविधा प्रदान करता है।

## संधारणीय विमानन ईंधन (SAF)

**चर्चा में क्यों?** भारत और ब्राज़ील ने हाल ही में संधारणीय विमानन ईंधन (SAF) के उत्पादन और उपयोग पर सहयोग करने का निर्णय लिया है।

### संधारणीय विमानन ईंधन (SAF) के बारे में:

संधारणीय विमानन ईंधन (SAF) जैव ईंधन हैं जिन्हें पारंपरिक जीवाश्म-आधारित जेट ईंधन के लिए कम कार्बन विकल्प प्रदान करके विमानन के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

### 1. संधारणीय विमानन ईंधन (SAF) क्या है?

SAF नवीकरणीय या अपशिष्ट-व्युत्पन्न विमानन ईंधन हैं जो हवाई यात्रा के कार्बन पदचिह्न को काफी कम कर सकते हैं। वे विभिन्न प्रकार के फीडस्टॉक से उत्पादित होते हैं, जैसे:

**बायोमास:** उदाहरण के लिए, पौधों के तेल, कृषि अवशेष, वन अपशिष्ट।

**अपशिष्ट पदार्थ:** उदाहरण के लिए, इस्तेमाल किया गया खाना पकाने का तेल, नगरपालिका का ठोस अपशिष्ट और औद्योगिक अपशिष्ट गैसों।

**गैर-बायोमास स्रोत:** उदाहरण के लिए, हाइड्रोजन (पावर-टू-लिक्विड तकनीक) के साथ संयुक्त हवा से कार्बन कैप्चर।

### 2. SAF का उत्पादन कैसे किया जाता है?

SAF का उत्पादन विभिन्न तरीकों से किया जाता है, जिनमें शामिल हैं:

**हाइड्रोप्रोसेस्ड एस्टर और फैटी एसिड (HEFA):** सबसे व्यावसायिक रूप से उपलब्ध तरीका, जिसमें तेल और वसा का उपयोग किया जाता है।

**फिशर-ट्रॉप्स प्रक्रिया:** ठोस बायोमास या अपशिष्ट को तरल ईंधन में परिवर्तित करती है।

**अल्कोहल-टू-जेट (ATJ):** अल्कोहल (इथेनॉल, ब्यूटेनॉल) को जेट ईंधन में परिवर्तित करती है।

**पावर-टू-लिक्विड (PtL):** कैप्चर किए गए कार्बन डाइऑक्साइड और हाइड्रोजन से ईंधन का संश्लेषण करती है।

### 3. पर्यावरणीय लाभ:

**कार्बन में कमी:** SAF पारंपरिक जेट ईंधन की तुलना में जीवन-चक्र CO<sub>2</sub> उत्सर्जन को 80% तक कम कर सकता है, जो फीडस्टॉक और उत्पादन प्रक्रिया पर निर्भर करता है।

**कम पार्टिकुलेट मैटर और SO<sub>x</sub> उत्सर्जन:** SAF कम पार्टिकुलेट मैटर और सल्फर ऑक्साइड भी उत्सर्जित करता है, जिससे हवाई अड्डों के आसपास हवा की गुणवत्ता में सुधार होता है।

**स्थायित्व:** SAF उत्पादन अपशिष्ट पदार्थों के उपयोग को बढ़ावा देता है और कुछ पहली पीढ़ी के जैव ईंधनों के विपरीत खाद्य फसलों के साथ प्रतिस्पर्धा से बचता है।

## श्रम बल सर्वेक्षण वार्षिक रिपोर्ट-2024: श्रमिक जनसंख्या अनुपात (WPR) क्या है?

**चर्चा में क्यों?** हाल ही में जारी श्रम बल सर्वेक्षण वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, जुलाई 2023 से जून 2024 तक 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों के लिए बेरोजगारी दर 3.2 प्रतिशत पर अपरिवर्तित बनी हुई है।

**रिपोर्ट के मुख्य बिंदु:** रिपोर्ट में कहा गया है कि पुरुषों के लिए बेरोजगारी दर जुलाई 2022 जून 2023 के दौरान 3.3 प्रतिशत से जुलाई 2023 जून 2024 के दौरान 3.2 प्रतिशत तक मामूली गिरावट देखी गई है, जबकि महिलाओं के बीच यह इसी अवधि के दौरान 2.9 प्रतिशत से बढ़कर 3.2 प्रतिशत हो गई है।

- **15 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों** के लिए सामान्य स्थिति में श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) जुलाई 2023 - जून 2024 के दौरान 60.1 प्रतिशत थी, जो पिछले वर्ष के **57.9 प्रतिशत** से अधिक थी।
- पुरुषों और महिलाओं के लिए यह क्रमशः **78.8 प्रतिशत और 41.7 प्रतिशत** था।
- एलएफपीआर को जनसंख्या में श्रम बल (यानी काम करने वाले या काम की तलाश करने वाले या काम के लिए उपलब्ध) में व्यक्तियों के प्रतिशत के रूप में परिभाषित किया गया है।
- सामान्य स्थिति में **15 वर्ष से अधिक आयु की महिलाओं** के लिए एलएफपीआर जुलाई 2022 जून 2023 के दौरान **37.0 प्रतिशत** से बढ़कर जुलाई 2023 जून 2024 के दौरान **41.7 प्रतिशत** हो गया है।
- समान आयु वर्ग के पुरुषों के लिए सामान्य स्थिति में एलएफपीआर उसी समय अवधि के दौरान **78.5 प्रतिशत से बढ़कर 78.8 प्रतिशत हो गया है।**
- सामान्य स्थिति में श्रमिक जनसंख्या अनुपात (डब्ल्यूपीआर) जुलाई 2023 जून 2024 के दौरान 58.2 प्रतिशत था, जो पिछले वर्ष **56.0 प्रतिशत** था। पुरुषों और महिलाओं के लिए यह क्रमशः **76.3 प्रतिशत और 40.3 प्रतिशत** था।
- 15 वर्ष और उससे अधिक आयु की महिलाओं के बीच सामान्य स्थिति में WPR जुलाई 2022 जून 2023 के दौरान **35.9 प्रतिशत से बढ़कर जुलाई 2023 जून 2024** के दौरान 40.3 प्रतिशत हो गई है।

### श्रमिक जनसंख्या अनुपात (WPR) के बारे में:

- श्रमिक जनसंख्या अनुपात (WPR) एक विशिष्ट आयु वर्ग की कुल जनसंख्या में कार्यरत जनसंख्या (नियोजित व्यक्ति) का अनुपात है, जो अक्सर 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के होते हैं।

### श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) के बारे में:

- श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) कार्यशील आयु की आबादी के अनुपात को मापती है जो या तो कार्यरत है या सक्रिय रूप से रोजगार की तलाश कर रही है (श्रम बल)।

### बेरोजगारी दर के बारे में:

- बेरोजगारी दर श्रम बल में उन लोगों के प्रतिशत को दर्शाती है जो बेरोजगार हैं लेकिन सक्रिय रूप से रोजगार की तलाश कर रहे हैं।

## भविष्य के लिए समझौता: संयुक्त राष्ट्र

**चर्चा में क्यों?** विश्व नेताओं ने हाल ही में भविष्य के लिए एक समझौता अपनाया है जिसमें एक वैश्विक डिजिटल समझौता और भावी पीढ़ियों पर एक घोषणा शामिल है। इस समझौते में शांति और सुरक्षा, सतत विकास, जलवायु परिवर्तन, डिजिटल सहयोग, मानवाधिकार, लिंग, युवा और भावी पीढ़ियों और वैश्विक शासन के परिवर्तन सहित कई मुद्दों को शामिल किया गया है।

### समझौते का महत्व:

- भविष्य के लिए समझौता, वैश्विक डिजिटल समझौता और भावी पीढ़ियों पर घोषणा नए अवसरों और अप्रयुक्त संभावनाओं के द्वार खोलेगा।
- यह समझौता सभी लोगों और राष्ट्रों के लिए एक स्थायी, न्यायसंगत और शांतिपूर्ण वैश्विक व्यवस्था की नींव रखेगा।

### प्रमुख समझौते:

#### शांति और सुरक्षा के क्षेत्र में:

- 1960 के दशक के बाद से सुरक्षा परिषद सुधार के लिए सबसे प्रगतिशील और ठोस प्रतिबद्धता, जिसमें परिषद की प्रभावशीलता और प्रतिनिधित्व में सुधार करने की योजना है, जिसमें अफ्रीका के ऐतिहासिक रूप से कम प्रतिनिधित्व को प्राथमिकता के रूप में दूर करना शामिल है।
- एक दशक से भी अधिक समय में परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए पहली बहुपक्षीय पुनः प्रतिबद्धता, जिसमें परमाणु हथियारों को पूरी तरह से समाप्त करने के लक्ष्य के प्रति स्पष्ट प्रतिबद्धता है।
- बाह्य अंतरिक्ष को नियंत्रित करने वाले अंतर्राष्ट्रीय ढाँचों को मजबूत करने के लिए समझौता, जिसमें बाह्य अंतरिक्ष में हथियारों की दौड़ को रोकने के लिए स्पष्ट प्रतिबद्धता और यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता शामिल है कि सभी देश बाह्य अंतरिक्ष के सुरक्षित और टिकाऊ अन्वेषण से लाभ उठा सकें।
- घातक स्वायत्त हथियारों जैसी नई प्रौद्योगिकियों के शस्त्रीकरण और दुरुपयोग से बचने के लिए कदम, और यह पुष्टि कि युद्ध के कानून इनमें से कई नई प्रौद्योगिकियों पर लागू होने चाहिए।
- सतत विकास, जलवायु और विकास के लिए वित्तपोषण पर:

#### संपूर्ण संधि सतत विकास लक्ष्यों के कार्यान्वयन को गति देने के लिए बनाई गई है।

- अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचना में सुधार की आवश्यकता पर संयुक्त राष्ट्र में अब तक का सबसे विस्तृत समझौता ताकि यह विकासशील देशों का बेहतर प्रतिनिधित्व और सेवा कर सके, जिसमें शामिल हैं:
- विकासशील देशों को अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों में निर्णय लेने के तरीके में अधिक अधिकार देना;
- विकासशील देशों को उनकी विकास आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करने के लिए बहुपक्षीय विकास बैंकों से अधिक वित्तपोषण जुटाना;
- यह सुनिश्चित करने के लिए संप्रभु ऋण संरचना की समीक्षा करना कि विकासशील देश अपने भविष्य में निवेश करने के लिए सतत रूप से उधार ले सकें, जिसमें IMF, UN, G20 और अन्य प्रमुख खिलाड़ी एक साथ काम कर रहे हों;
- IMF और सदस्य देशों द्वारा ठोस कार्रवाई के माध्यम से वित्तीय और आर्थिक झटकों की स्थिति में सबसे गरीब लोगों की रक्षा के लिए वैश्विक वित्तीय सुरक्षा जाल को मजबूत करना;

- जलवायु परिवर्तन पर, वैश्विक तापमान वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तरों से **1.5 डिग्री सेल्सियस ऊपर रखने और 2050 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन प्राप्त करने के लिए ऊर्जा प्रणालियों में जीवाश्म ईंधन से दूर जाने की आवश्यकता की पुष्टि।**

#### ग्लोबल डिजिटल कॉम्पैक्ट:

- समझौते से जुड़ा ग्लोबल डिजिटल कॉम्पैक्ट डिजिटल सहयोग और एआई गवर्नेंस के लिए पहला व्यापक वैश्विक ढांचा है।
- इस समझौते के केंद्र में सभी के लाभ के लिए प्रौद्योगिकी को डिजाइन, उपयोग और नियंत्रित करने की प्रतिबद्धता है।

#### इसमें विश्व नेताओं द्वारा निम्नलिखित प्रतिबद्धताएं शामिल हैं:

- सभी लोगों, स्कूलों और अस्पतालों को इंटरनेट से जोड़ना;
- मानवाधिकारों और अंतर्राष्ट्रीय कानून में डिजिटल सहयोग को बढ़ावा देना;
- सरकारों, तकनीकी कंपनियों और सोशल मीडिया द्वारा की गई कार्रवाइयों के माध्यम से ऑनलाइन स्पेस को सभी के लिए, विशेष रूप से बच्चों के लिए सुरक्षित बनाना;
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को नियंत्रित करना, एक रोडमैप के साथ जिसमें एक अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक पैनल और एआई पर एक वैश्विक नीति संवाद शामिल है;
- ओपन-सोर्स डेटा, मॉडल और मानकों पर समझौतों के साथ डेटा को अधिक खुला और सुलभ बनाना;
- यह डेटा गवर्नेंस के लिए पहली वैश्विक प्रतिबद्धता भी है, इसे संयुक्त राष्ट्र के एजेंडे में रखा गया है और देशों को 2030 तक ठोस कार्रवाई करने की आवश्यकता है।

#### युवा और भावी पीढ़ियाँ: भावी पीढ़ियों पर घोषणा

- भावी पीढ़ियों पर पहली घोषणा, जिसमें हमारे निर्णय लेने में भावी पीढ़ियों को ध्यान में रखने के लिए ठोस कदम उठाए गए हैं, जिसमें भावी पीढ़ियों के लिए संभावित दूत भी शामिल है।
- युवा लोगों को उनके जीवन को आकार देने वाले निर्णयों में भाग लेने के लिए अधिक सार्थक अवसरों के लिए प्रतिबद्धता, विशेष रूप से वैश्विक स्तर पर।

#### मानव अधिकार और लिंग:

- मानवाधिकार, लैंगिक समानता और महिलाओं के सशक्तीकरण पर हमारे काम को मजबूत करना।
- मानवाधिकार रक्षकों की सुरक्षा की आवश्यकता पर स्पष्ट आह्वान।
- स्थानीय और क्षेत्रीय सरकारों, नागरिक समाज, निजी क्षेत्र और अन्य सहित वैश्विक शासन में अन्य हितधारकों की भागीदारी के महत्व पर मजबूत संकेत।

## असम समझौता : खंड 6

**चर्चा में क्यों?** असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने हाल ही में **असम समझौते के खंड 6** के कार्यान्वयन पर न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) बिप्लब सरमा समिति की सिफारिशों पर चर्चा करने के लिए ऑल असम स्टूडेंट्स यूनियन (AASU) नेतृत्व के साथ एक बैठक की अध्यक्षता की।

बैठक के बाद मीडिया से बात करते हुए मुख्यमंत्री सरमा ने कहा कि राज्य सरकार बराक घाटी और 6वीं अनुसूची क्षेत्रों में सहमति के बिना असम समझौते के खंड 6 को लागू नहीं करेगी।

### असम समझौते के बारे में:

- यह 1985 में भारत सरकार, असम सरकार और ऑल असम स्टूडेंट्स यूनियन (AASU) के बीच हस्ताक्षरित एक त्रिपक्षीय समझौता है। यह लंबे समय से चल रहे असम आंदोलन को हल करने की दिशा में एक बड़ा कदम था, जो मुख्य रूप से बांग्लादेश से अवैध आवाजन के मुद्दे पर केंद्रित था।

### असम समझौते के प्रमुख प्रावधान:

**कट-ऑफ तिथि:** समझौते ने असम में रहने वाले व्यक्तियों की नागरिकता की स्थिति निर्धारित करने के लिए 25 मार्च, 1971 को कट-ऑफ तिथि के रूप में स्थापित किया। इस तिथि से पहले या इस तिथि को असम में प्रवेश करने वालों को भारतीय नागरिक माना जाएगा, जबकि इस तिथि के बाद प्रवेश करने वालों को अवैध अप्रवासी माना जाएगा।

**निर्वासन:** समझौते में कट-ऑफ तिथि के बाद पहचाने गए सभी अवैध अप्रवासियों को निर्वासित करने का आह्वान किया गया।

**मतदाता सूची संशोधन:** इसने अवैध अप्रवासियों के नाम हटाने के लिए मतदाता सूची में संशोधन को अनिवार्य बना दिया।

**भाषा संरक्षण:** समझौते में भाषा संरक्षण के मुद्दे को भी संबोधित किया गया, जिसमें राज्य की आधिकारिक भाषा के रूप में असमिया का उपयोग सुनिश्चित किया गया।

**संवैधानिक सुरक्षा उपाय:** इसने असम के स्वदेशी लोगों के हितों की रक्षा के लिए संवैधानिक सुरक्षा उपाय प्रदान किए।

### असम समझौते के खंड 6 के बारे में:

असम समझौते (1985) का खंड 6 स्वदेशी असमिया लोगों की पहचान, संस्कृति और अधिकारों की रक्षा के लिए बनाया गया एक प्रमुख प्रावधान है। असम समझौते पर 15 अगस्त, 1985 को भारत सरकार और असम आंदोलन के नेताओं के बीच हस्ताक्षर किए गए थे, जिसका उद्देश्य बांग्लादेश से असम में अवैध अप्रवास की चिंताओं को दूर करना था।

### खंड 6 के मुख्य प्रावधान:

**असम समझौते के खंड 6 में विशेष रूप से कहा गया है:**

- संवैधानिक, विधायी और प्रशासनिक सुरक्षा उपाय, जो भी उचित हो, असमिया लोगों की सांस्कृतिक, सामाजिक, भाषाई पहचान और विरासत की रक्षा, संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रदान किए जाएंगे।

### मुख्य उद्देश्य:

**असमिया पहचान की रक्षा:** मुख्य लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि असम के स्वदेशी लोगों के सांस्कृतिक, भाषाई और सामाजिक अधिकार सुरक्षित हों।

**विधायी और प्रशासनिक सुरक्षा उपाय:** खंड में यह परिकल्पना की गई है कि भारत सरकार असमिया लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिए विधायी या प्रशासनिक उपाय करेगी। हालाँकि, इन सुरक्षा उपायों के बारे में विशिष्ट प्रावधान समझौते में विस्तृत नहीं थे, जिससे यह भविष्य की कार्रवाई के लिए खुला रह गया।

## खनिज सुरक्षा वित्त नेटवर्क

**चर्चा में क्यों ?** भारत अमेरिका के नेतृत्व वाले खनिज सुरक्षा वित्त नेटवर्क में शामिल हो गया है।

भारत आधिकारिक तौर पर अमेरिका के नेतृत्व वाले खनिज सुरक्षा वित्त नेटवर्क में शामिल हो गया है, जिसे भारत-प्रशांत क्षेत्र और यूरोप में संस्थानों के बीच सहयोग बढ़ाने और सूचना साझा करने और सह-वित्तपोषण की सुविधा प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

### उद्देश्य:

- महत्वपूर्ण खनिजों के लिए विविध, सुरक्षित और टिकाऊ आपूर्ति श्रृंखलाओं को बढ़ावा देना,...
- केवल एक या दो देशों में केंद्रित आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाना
- वैश्विक महत्वपूर्ण खनिज आपूर्ति पर चीन का बढ़ता प्रभाव।

यह पहल खनिज सुरक्षा भागीदारी का हिस्सा है।

### खनिज सुरक्षा भागीदारी के बारे में:

- खनिज सुरक्षा भागीदारी (MSP) एक अंतर्राष्ट्रीय पहल है जिसका उद्देश्य स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों, उच्च तकनीक विनिर्माण और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण खनिजों की आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करना है।
- **लिथियम, कोबाल्ट, निकल और दुर्लभ पृथ्वी तत्वों (REE)** जैसे प्रमुख खनिजों की आपूर्ति श्रृंखला कमजोरियों पर बढ़ती चिंताओं के जवाब में, इसे संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा समान विचारधारा वाले देशों और क्षेत्रों के गठबंधन के साथ 2022 में लॉन्च किया गया था।

### MSP के उद्देश्य:

- महत्वपूर्ण खनिजों तक सुरक्षित पहुँच: साझेदारी उन महत्वपूर्ण खनिजों की स्थिर और विश्वसनीय आपूर्ति सुनिश्चित करने पर केंद्रित है जो इलेक्ट्रिक वाहनों, नवीकरणीय ऊर्जा अवसंरचना, अर्धचालकों और अन्य रणनीतिक उद्योगों के उत्पादन के लिए आवश्यक हैं।

**आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाना:** प्रमुख लक्ष्यों में से एक कुछ देशों (विशेष रूप से चीन) पर निर्भरता को कम करना है जो वर्तमान में कई महत्वपूर्ण खनिजों के उत्पादन और प्रसंस्करण पर हावी हैं। MSP विविध, पारदर्शी और टिकाऊ वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएँ बनाने का प्रयास करता है।

**स्थिरता और पर्यावरण मानक:** साझेदारी टिकाऊ खनन प्रथाओं और यह सुनिश्चित करने के महत्व पर जोर देती है कि महत्वपूर्ण खनिजों के निष्कर्षण, प्रसंस्करण और वितरण में पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ESG) मानकों को पूरा किया जाए।

**निवेश को बढ़ावा देना:** MSP का उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों में खनन और खनिज प्रसंस्करण परियोजनाओं में निवेश को उत्प्रेरित करना है, विशेष रूप से खनिज संसाधनों से समृद्ध विकासशील देशों में। वित्तीय संसाधनों और विशेषज्ञता को एकत्रित करके, भागीदार नए खनिज निष्कर्षण और प्रसंस्करण सुविधाओं के विकास को सुनिश्चित करना चाहते हैं।

#### प्रमुख खनिज:

**लिथियम:** इलेक्ट्रिक वाहनों और नवीकरणीय ऊर्जा भंडारण के लिए बैटरी में उपयोग किया जाता है।

**कोबाल्ट:** बैटरी उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण।

**निकेल:** स्टेनलेस स्टील और बैटरी उत्पादन के लिए आवश्यक।

**दुर्लभ पृथ्वी तत्व (REE):** इलेक्ट्रॉनिक्स, मैग्नेट और सैन्य प्रौद्योगिकियों के लिए महत्वपूर्ण।

ग्रेफाइट, मैंगनीज और कॉपर: बैटरी प्रौद्योगिकियों और विद्युत अवसंरचना के लिए प्रमुख घटक।

#### भाग लेने वाले देश:

**2023 तक, MSP में निम्नलिखित देश शामिल हैं:**

- संयुक्त राज्य अमेरिका
- कनाडा
- ऑस्ट्रेलिया
- जापान
- दक्षिण कोरिया
- यूनाइटेड किंगडम
- यूरोपीय संघ (सामूहिक रूप से प्रतिनिधित्व)
- जर्मनी
- फ़िनलैंड
- स्वीडन

### हीट डोम प्रभाव

**चर्चा में क्यों ?** असम राज्य ने हाल ही में सितंबर में 40 डिग्री सेल्सियस के करीब अभूतपूर्व तापमान का अनुभव किया है, जो इस क्षेत्र के लिए असामान्य है, जिसे हीट डोम प्रभाव के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।

#### हीट डोम प्रभाव के बारे में:

- यह एक मौसम संबंधी घटना है जहाँ एक उच्च दबाव प्रणाली एक विशेष क्षेत्र पर लंबे समय तक गर्म हवा के एक समूह को फँसाती है।
- इससे अत्यधिक उच्च तापमान होता है, जिसके परिणामस्वरूप अक्सर लंबे समय तक गर्मी की लहरें चलती हैं।
- फँसी हुई गर्मी बाहर नहीं निकल पाती है, और जैसे-जैसे उच्च दबाव प्रणाली बनी रहती है, उसके नीचे के क्षेत्र में तापमान बढ़ता जाता है, जिससे गर्मी का "गुंबद" बनता है।

**हीट डोम प्रभाव की मुख्य विशेषताएँ:****उच्च दबाव प्रणाली:**

- हीट डोम तब बनता है जब ऊपरी वायुमंडल (आमतौर पर क्षोभमंडल में) में एक उच्च दबाव प्रणाली किसी क्षेत्र पर स्थिर हो जाती है।
- यह उच्च दबाव "गुंबद" हवा को नीचे की ओर संपीड़ित करता है, जो संपीड़न (जिसे एडियाबेटिक वार्मिंग के रूप में जाना जाता है) के कारण नीचे की ओर हवा को गर्म करता है।

**स्थिर मौसम की स्थिति:**

- उच्च दबाव प्रणाली ठंडी हवा को क्षेत्र में प्रवेश करने से रोकती है और बादलों को बनने से रोकती है, जिससे आसमान साफ रहता है और लगातार धूप निकलती है, जिससे गर्मी और भी बढ़ जाती है।
- गर्म हवा सतह के पास फंसी रहती है क्योंकि इसे विस्थापित करने के लिए बहुत कम वायुमंडलीय परिसंचरण होता है।

**समय के साथ गर्मी का बिगड़ना:**

- जैसे-जैसे गुंबद के नीचे दिन-ब-दिन गर्मी बढ़ती जाती है, जमीन का तापमान बढ़ता जाता है, कभी-कभी खतरनाक स्तर तक पहुँच जाता है, खासकर गर्मियों के चरम महीनों के दौरान।

**लंबे समय तक:**

- हीट डोम कई दिनों या हफ्तों तक बना रह सकता है, जिससे प्रभावित क्षेत्रों के लिए ठंडा होना चुनौतीपूर्ण हो जाता है, खासकर रात में, क्योंकि गर्मी प्रेशर डोम के नीचे फंस जाती है।

**हीट डोम प्रभाव के कारण:****जेट स्ट्रीम पैटर्न:**

- हीट डोम अक्सर जेट स्ट्रीम में पैटर्न से संबंधित होता है, जो वायुमंडल के ऊपरी स्तरों में तेज़ बहने वाली हवा की धाराएँ होती हैं।
- जब जेट स्ट्रीम कमज़ोर हो जाती है या लहरदार हो जाती है, तो यह उच्च दबाव की एक रिज बना सकती है, जिससे हीट डोम बन सकता है।

**महासागर-वायुमंडलीय अंतर्क्रियाएँ:**

- इस बात के प्रमाण हैं कि महासागर की सतह के तापमान में परिवर्तन (जैसे, ला नीना स्थितियाँ) वायुमंडलीय परिसंचरण पैटर्न को प्रभावित करके हीट डोम के निर्माण को प्रभावित कर सकते हैं।
- समुद्र के गर्म तापमान के कारण वायुमंडल में अधिक गर्मी और नमी बढ़ सकती है, जिससे उच्च दबाव वाली लकीरें बन सकती हैं।

**हीट डोम प्रभाव के प्रभाव:****स्वास्थ्य जोखिम:**

- अत्यधिक तापमान के कारण हीट स्ट्रोक, निर्जलीकरण और हीट थकावट जैसी गर्मी से संबंधित बीमारियाँ हो सकती हैं। कमज़ोर आबादी, जैसे कि बुजुर्ग, बच्चे और पहले से मौजूद बीमारियाँ, ज़्यादा जोखिम में हैं।

**कृषि क्षति:**

- लंबे समय तक गर्मी फसलों पर दबाव डाल सकती है, जिससे पैदावार कम हो सकती है या फसल पूरी तरह से बर्बाद हो सकती है। चरम मामलों में, यह शुष्क परिस्थितियों के कारण जंगल में आग लगने का कारण भी बन सकता है।

**ऊर्जा की बढ़ी हुई माँग:**

- हीट डोम के दौरान, एयर कंडीशनिंग के बढ़ते उपयोग के कारण ऊर्जा की माँग बढ़ जाती है, जिससे अक्सर बिजली गुल हो जाती है या ग्रिड ओवरलोड हो जाता है।

**पर्यावरण और पारिस्थितिकी पर प्रभाव:**

- हीट डोम सूखे की स्थिति को बढ़ा सकते हैं, जल स्रोतों को सुखा सकते हैं और पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित कर सकते हैं, जिससे वन्यजीव और पौधों की प्रजातियाँ खतरे में पड़ सकती हैं।

**हाल के उदाहरण:**

- जून 2021 में, **संयुक्त राज्य अमेरिका और पश्चिमी कनाडा के प्रशांत उत्तर-पश्चिम** में एक महत्वपूर्ण हीट डोम हुआ, जिससे रिकॉर्ड तोड़ तापमान हुआ। कुछ क्षेत्रों में **49.6°C (121.3°F)** तक का तापमान दर्ज किया गया, जिससे बड़े पैमाने पर जंगल में आग लग गई और सैकड़ों लोग गर्मी से संबंधित मौतों का शिकार हो गए।

**एल-69 और सी-10 राष्ट्र समूह**

**चर्चा में क्यों?** भारत के विदेश मंत्रालय (एमईए) की एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, एल.69, जो एशिया, लैटिन अमेरिका और अफ्रीका के 30 से अधिक देशों का समूह है, और सी10, जो अफ्रीकी देशों का एक प्रभावशाली समूह है, के मंत्रियों का मानना है कि सुरक्षा परिषद सुधार में देरी करने से संयुक्त राष्ट्र की "विश्वसनीयता और वैधता पर सीधा असर पड़ता है"।

**एल-69 समूह के बारे में:**

**संरचना:** एल-69 समूह में अफ्रीका, एशिया, कैरिबियन और प्रशांत क्षेत्र के 42 विकासशील देश शामिल हैं। प्रमुख सदस्यों में भारत, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका और कई कैरिबियाई देश शामिल हैं।

**गठन:** इसे 2013 में विकासशील देशों के सामूहिक हितों का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक गठबंधन के रूप में स्थापित किया गया था, विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) सहित वैश्विक शासन में सुधार पर चर्चा में।

**उद्देश्य:**

- वैश्विक निर्णय लेने वाले निकायों में विकासशील देशों के न्यायसंगत प्रतिनिधित्व की वकालत करना।
- जलवायु परिवर्तन, सतत विकास और वैश्विक व्यापार जैसे मुद्दों को बढ़ावा देना जो सदस्य देशों के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

**सी-10 समूह के बारे में:**

**संरचना:** सी-10 समूह कैरिबियन और अफ्रीकी महाद्वीप के 10 देशों का गठबंधन है। उल्लेखनीय सदस्यों में अल्जीरिया, अंगोला और नाइजीरिया शामिल हैं।

**गठन:** इसकी स्थापना संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधारों को आगे बढ़ाने और सुधारित यूएनएससी में अफ्रीकी प्रतिनिधित्व को शामिल करने की वकालत करने के लिए की गई थी।

**उद्देश्य:**

- वैश्विक शासन में अफ्रीकी देशों की आवाज़ को मज़बूत करना।
- अफ्रीका में शांति और सुरक्षा और व्यापक वैश्विक संदर्भ से संबंधित मुद्दों को संबोधित करना।
- अधिक लोकतांत्रिक और प्रतिनिधि संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के लिए प्रयास करना।

**विस्तारित निधि सुविधा**

**चर्चा में क्यों?** आईएमएफ ने हाल ही में पाकिस्तान के लिए आधिकारिक तौर पर 7 बिलियन डॉलर की विस्तारित निधि सुविधा व्यवस्था (EFF) को मंजूरी दी है।

**विस्तारित निधि सुविधा क्या है?**

**विस्तारित निधि सुविधा (EFF)** उन देशों के लिए है जो दीर्घकालिक संरचनात्मक आर्थिक समस्याओं का सामना कर रहे हैं, जिन्हें भुगतान संतुलन के गहरे मुद्दों को संबोधित करने के लिए लंबी अवधि में अधिक निरंतर सुधारों की आवश्यकता है।

**मुख्य विशेषताएं:**

**अवधि:** एक EFF कार्यक्रम आमतौर पर तीन से चार साल (पुनर्भुगतान के लिए 10 साल तक) तक चलता है, जो संरचनात्मक आर्थिक सुधारों को लागू करने के लिए आवश्यक समय को दर्शाता है।

**उद्देश्य:** उन देशों को वित्तीय सहायता प्रदान करना जिन्हें महत्वपूर्ण नीति समायोजन करने की आवश्यकता है, जिसमें अक्सर आर्थिक असंतुलन को ठीक करने के लिए जटिल संरचनात्मक सुधार शामिल होते हैं।

**शर्तें:** SBA के समान, लेकिन EFF के तहत सुधार दीर्घकालिक संरचनात्मक मुद्दों, जैसे श्रम बाजार सुधार, वित्तीय क्षेत्र पुनर्गठन और शासन सुधार पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं।

**निधियों तक पहुँच:** EFF, SBA की तुलना में बड़ा और दीर्घावधि वित्तपोषण प्रदान करता है, जिसमें देश द्वारा सहमत सुधारों के पालन के आधार पर कार्यक्रम अवधि में संवितरण फैला हुआ है।

**उपयोग का उदाहरण:**

- मिस्र और पाकिस्तान जैसे देशों ने लगातार आर्थिक मुद्दों, जैसे कि राजकोषीय घाटे, मुद्रास्फीति और संरचनात्मक आर्थिक कमज़ोरियों को संबोधित करने के लिए EFF की ओर रुख किया है।

**स्टैंड-बाय अरेंजमेंट (SBA) क्या है?**

- स्टैंड-बाय अरेंजमेंट (SBA) IMF का प्राथमिक ऋण उपकरण है जो अल्पकालिक से मध्यम अवधि के वित्तीय समर्थन के लिए है। इसे उन देशों की मदद करने के लिए डिज़ाइन किया गया है जो अस्थायी भुगतान संतुलन की समस्याओं या अल्पकालिक संकटों का सामना कर रहे हैं।

**मुख्य विशेषताएँ:**

**अवधि:** आमतौर पर, SBA 12 से 24 महीने तक रहता है, हालाँकि इसे कुछ मामलों में 36 महीने तक बढ़ाया जा सकता है।

**उद्देश्य:** असंतुलन को दूर करने और बड़े आर्थिक संकटों को रोकने के लिए देशों को अल्पकालिक वित्तीय सहायता प्रदान करना।

**शर्त:** SBA प्राप्त करने वाले देशों को आर्थिक स्थिरता बहाल करने के लिए नीतिगत सुधारों को लागू करना होगा, जिसमें राजकोषीय मितव्ययिता, मौद्रिक कसावट और संरचनात्मक सुधार शामिल हो सकते हैं।

**धन तक पहुँच:** वित्तीय सहायता की राशि देश की ज़रूरतों और उसकी आर्थिक स्थिति की गंभीरता पर निर्भर करती है। विशिष्ट नीति बेंचमार्क के पूरा होने के आधार पर चरणों में धन वितरित किया जाता है।

#### उपयोग का उदाहरण:

- जो देश अचानक मुद्रा अवमूल्यन या बाहरी झटकों (जैसे, कमोडिटी की कीमत में गिरावट) का अनुभव करते हैं, वे SBA सहायता ले सकते हैं। अर्जेंटीना और ग्रीस ने आर्थिक संकटों के दौरान अतीत में SBA का उपयोग किया है।

#### मुख्य अंतर:

**समय सीमा:** SBA छोटी से मध्यम अवधि की चुनौतियों के लिए है, जबकि EFF लंबी अवधि के संरचनात्मक सुधारों को लक्षित करता है।

**ऋण चुकौती:** SBA ऋणों में आम तौर पर कम चुकौती अवधि (3 से 5 वर्ष) होती है, जबकि EFF ऋणों में लंबी चुकौती अवधि (4.5 से 10 वर्ष) होती है।

**फ़ोकस:** SBA तत्काल स्थिरीकरण पर ध्यान केंद्रित करता है, जबकि EFF अर्थव्यवस्था में गहरे, प्रणालीगत परिवर्तनों से अधिक चिंतित है।

## केफ़ियेह क्या है?

**चर्चा में क्यों ?** पुलित्ज़र पुरस्कार विजेता लेखिका झुम्पा लाहिरी ने हाल ही में न्यूयॉर्क शहर के नोगुची संग्रहालय से पुरस्कार लेने से मना कर दिया है, क्योंकि संग्रहालय ने तीन कर्मचारियों को केफ़ियेह हेड स्कार्फ़ पहनने के कारण नौकरी से निकाल दिया था, जो फ़िलिस्तीनी एकजुटता का प्रतीक है।

#### केफ़ियेह के बारे में:

- केफ़ियेह (जिसे कुफ़िया, घुटरा या शेमाघ के नाम से भी जाना जाता है) एक पारंपरिक मध्य पूर्वी हेडड्रेस है जिसका गहरा सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक महत्व है। इसे आम तौर पर पुरुष पहनते हैं, खासकर अरब देशों में, लेकिन इसे पहचान और प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में वैश्विक मान्यता भी मिली है।

#### केफ़ियेह की मुख्य विशेषताएँ:

**सामग्री:** पारंपरिक रूप से, केफ़ियेह कपास या कपास-ऊन के मिश्रण से बना होता है, जिसे हल्का और हवादार बनाया जाता है, जिससे यह गर्म, शुष्क रेगिस्तानी जलवायु के लिए उपयुक्त होता है।

**डिज़ाइन:** केफ़ियेह की सबसे पहचानी जाने वाली विशेषता इसका चेकर्ड पैटर्न है, जो आमतौर पर काले और सफ़ेद रंग का होता है, हालाँकि रंगों में भिन्नताएँ (जैसे लाल या हरा) क्षेत्र या देश के आधार पर मौजूद होती हैं।

**पहनने का तरीका:** इसे आमतौर पर एक त्रिकोण में मोड़ा जाता है और सिर पर लपेटा जाता है, जिसके दोनों सिरे सिर या गर्दन के चारों ओर लपेटे जाते हैं। इसे एक अगल (एक काली रस्सी) से भी सुरक्षित किया जा सकता है ताकि इसे जगह पर रखा जा सके।

**उत्पत्ति और सांस्कृतिक महत्व:**

**ऐतिहासिक जड़ें:** अरब प्रायद्वीप और मेसोपोटामिया में सदियों से लोग केफ़ियेह पहनते आ रहे हैं। इसे पारंपरिक रूप से किसानों और रेगिस्तानी निवासियों द्वारा व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया जाता था, जैसे कि धूप, रेत और हवा से सुरक्षा।

**क्षेत्रीय विविधताएँ:**

**फिलिस्तीन:** काले और सफ़ेद केफ़ियेह को विशेष रूप से फ़िलिस्तीनी पहचान के साथ जोड़ा जाता है। यह फ़िलिस्तीनी राष्ट्रवाद और प्रतिरोध का एक प्रतिष्ठित प्रतीक बन गया, खासकर यासर अराफ़ात जैसे नेताओं द्वारा लोकप्रिय होने के बाद।

**जॉर्डन:** लाल और सफ़ेद केफ़ियेह, जिसे जॉर्डन में शेमाघ कहा जाता है, अक्सर बेडौइन संस्कृति से जुड़ा होता है और इसे जॉर्डन के शाही परिवार और आम जनता द्वारा पहना जाता है।

**इराक और खाड़ी:** इन क्षेत्रों में, केफ़ियेह को अक्सर घुत्रा के रूप में संदर्भित किया जाता है और इसे सफ़ेद या अधिक सूक्ष्म पैटर्न के साथ पहना जाता है।

**प्रतीकात्मकता:** राष्ट्रवाद और प्रतिरोध: फिलिस्तीन में, केफ़ियेह कब्जे के खिलाफ़ प्रतिरोध, स्वतंत्रता के लिए संघर्ष और फिलिस्तीनी कारण के साथ एकजुटता का प्रतीक है। समय के साथ, यह वैश्विक स्तर पर प्रतिरोध और एकजुटता का प्रतीक बन गया है।

**सांस्कृतिक गौरव:** अरब दुनिया के अन्य हिस्सों में, केफ़ियेह सांस्कृतिक विरासत, गौरव और क्षेत्रीय पहचान का प्रतिनिधित्व करता है। वैश्विक फैशन: हाल के वर्षों में, केफ़ियेह को वैश्विक स्तर पर एक फैशन स्टेटमेंट के रूप में अपनाया गया है, लोग इसे स्कार्फ़ या एक्सेसरी के रूप में पहनते हैं। हालाँकि, इसका राजनीतिक और सांस्कृतिक महत्व बरकरार है, खासकर मध्य पूर्वी संदर्भों में। राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव:

**फिलिस्तीनी संघर्ष:** केफ़ियेह को 20वीं सदी के दौरान, विशेष रूप से 1960 और 1970 के दशक में आत्मनिर्णय के लिए फिलिस्तीनी संघर्ष के प्रतीक के रूप में व्यापक मान्यता मिली। फिलिस्तीन मुक्ति संगठन (पीएलओ) के नेता यासर अराफ़ात हमेशा काले और सफ़ेद केफ़ियेह पहनने के लिए जाने जाते थे, जो फिलिस्तीनी पहचान और उद्देश्य का प्रतीक बन गया।

**वैश्विक एकजुटता:** दुनिया भर में विभिन्न विरोध प्रदर्शनों और आंदोलनों में, केफ़ियेह को फिलिस्तीन के साथ एकजुटता दिखाने या साम्राज्यवाद-विरोधी और उपनिवेशवाद-विरोधी आंदोलनों के व्यापक प्रतीक के रूप में पहना जाता है।

## ‘जल सहेली’

**चर्चा में क्यों?** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ‘मन की बात’ की 114वीं कड़ी के अपने मासिक संबोधन में जल संरक्षण का आह्वान करते हुए उत्तर प्रदेश महिला समूह ‘जल सहेली’ और मध्य प्रदेश की महिलाओं के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि

बारिश के दिनों में बचाया गया पानी जल संकट के महीनों में बहुत मदद करता है। बारिश के दिनों में बचाया गया पानी जल संकट के महीनों में बहुत मदद करता है।

- पानी के संरक्षण को लेकर एक प्रयास उत्तर प्रदेश के झांसी में देखने को मिला है। यहाँ की पहचान पानी किल्लत से जुड़ी हुई है। यहाँ **कुछ महिलाओं ने घुरारी नदी को नया जीवन दिया है।**
- ये महिलाएं सेल्स हेल्प ग्रुप से जुड़ी हैं और उन्होंने **'जल सहेली' बनकर इस अभियान का नेतृत्व किया है।** इन महिलाओं ने बोरियों में बालू भरकर चेकडैम तैयार किया। बारिश का पानी बर्बाद होने से रोका और घुरारी नदी को पानी से लबालब कर दिया।
- इन महिलाओं ने सैकड़ों जलाशयों के निर्माण और उनके पुनर्जीवन में भी बढ़-चढ़कर हाथ बटाया है। इससे इस क्षेत्र के लोगों की पानी की समस्या तो दूर हुई ही है और उनके चेहरों पर, खुशियां भी लौट आई हैं। प्रधानमंत्री ने कहा, "कहीं नारी-शक्ति, जल-शक्ति को बढ़ाती है तो कहीं जल-शक्ति भी नारी-शक्ति को मजबूत करती है।"
- जनपद झांसी के स्वयं सहायता समूह से जुड़ी **महिलाओं द्वारा 'जल सहेली' बनकर मृतप्राय घुरारी नदी के संरक्षण और पुनर्जीवन के प्रयासों का उल्लेख, पूरे उत्तर प्रदेश के लिए गर्व का विषय है।** निश्चित ही इससे जल संरक्षण के कार्यों को नई ऊर्जा प्राप्त होगी। सैकड़ों जलाशयों के निर्माण में सहयोग कर महिला सशक्तिकरण की अद्भुत प्रतीक बनीं इन 'जल सहेली' महिलाओं ने अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए जल संरक्षण एवं संवर्धन का एक बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत किया है।

### राइनो की स्थिति 2024 : रिपोर्ट

**चर्चा में क्यों-** इंटरनेशनल राइनो फाउंडेशन (आईआरएफ) ने राइनो की स्थिति 2024 रिपोर्ट जारी की।

**रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष-**

- सभी पांच प्रजातियों को मिलाकर विश्व में लगभग **28,000 गैंडे बचे हैं।**
- 2022 से 2023 तक **अफ्रीका में गैंडों के अवैध शिकार में 4% की वृद्धि।**
- **सफेद गैंडों की संख्या में वृद्धि हुई लेकिन बड़े एक सींग वाले गैंडों (भारतीय गैंडों) की संख्या वही रही।**
- दक्षिण अफ्रीका में अवैध शिकार के बावजूद सफेद गैंडों की आबादी बढ़ रही है।

**राइनो के बारे में-**

- **गैंडे की पांच प्रजातियां:** 2 अफ्रीकी (सफेद गैंडा, काला गैंडा) और 3 एशियाई (भारतीय गैंडा, सुमात्रा गैंडा, और जावन गैंडा)।
- **गैंडा संरक्षण पहल:** भारतीय गैंडों के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय गैंडा संरक्षण रणनीति 2019; एशियाई गैंडों पर नई दिल्ली घोषणा 2019; भारतीय गैंडा विजन 2020 आदि।

**अफ्रीकी गैंडे और एशियाई गैंडे के बीच अंतर-**

विशेषताएँ	अफ्रीकी गैंडा	एशियाई गैंडा
-----------	---------------	--------------

<b>आकार</b>	सफेद गैंडा हाथियों के बाद दूसरा सबसे बड़ा स्थलीय स्तनधारी है।	भारतीय गैंडा सभी एशियाई गैंडा प्रजातियों में सबसे बड़ा है।
<b>उपस्थिति और व्यवहार</b>	कम बख्तरबंद अधिक आक्रामक 2 सींग वे तैराक नहीं होते और गहरे पानी में डूब सकते हैं (इसलिए वे कीचड़ में लोटते रहते हैं) अपने सींगों से लड़ता है। जमीन के पास ही चारा खाता है।	अधिक बख्तरबंद कम आक्रामक 2 सींग (सुमात्रा गैंडा) और 1 सींग (भारतीय गैंडा और जावन गैंडा) अच्छे तैराक अपने निचले दांतों से लड़ता है लम्बी घास, झाड़ियाँ और पत्ते खाता है।
<b>प्राकृतिक वास</b>	घास के मैदान, सवाना और झाड़ीदार भूमि; रेगिस्तान	उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय घास के मैदान और सवाना, उष्णकटिबंधीय नम वन
<b>संरक्षण स्थिति (आईयूसीएन)</b>	<b>सफेद गैंडा:</b> खतरे के करीब <b>काला गैंडा :</b> गंभीर रूप से संकटग्रस्त	<b>भारतीय गैंडा:</b> असुरक्षित; अनुसूची I (वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972) <b>सुमात्रा गैंडा:</b> गंभीर रूप से संकटग्रस्त <b>जावन गैंडा:</b> गंभीर रूप से संकटग्रस्त

## एशिया पावर इंडेक्स 2024

**चर्चा में क्यों-** भारत ने हाल ही में एशिया पावर इंडेक्स में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है, जिसमें उसने जापान को पीछे छोड़ते हुए तीसरे सबसे शक्तिशाली देश का दर्जा प्राप्त किया है। यह बदलाव भारत की बढ़ती भू-राजनीतिक हैसियत, सक्रिय विकास और तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था का संकेत है।

**भारत के उदय के मुख्य कारक:**

### 1. आर्थिक विकास-

- भारत ने महामारी के बाद तेज़ी से आर्थिक सुधार किए, जिससे उसकी आर्थिक क्षमता में 4.2 अंकों की वृद्धि हुई।
- भारत की जीडीपी और क्रय शक्ति समता (PPP) के संदर्भ में इसे दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में पहचान मिली है।
- बड़ी और युवा आबादी के चलते भारत के आर्थिक विकास की संभावनाएं आने वाले दशकों में और भी बढ़ सकती हैं।

### 2. भविष्य की संभावनाएं-

- भारत के भविष्य के संसाधन स्कोर में 8.2 अंकों की वृद्धि देखी गई है, जो इसके युवा जनसांख्यिकीय लाभांश का परिणाम है।

- भारत की युवा आबादी इसे अन्य प्रमुख एशियाई देशों, जैसे चीन और जापान, से आगे रखती है। यह आबादी आने वाले वर्षों में श्रम बल को बढ़ावा देती रहेगी।

### 3. कूटनीतिक प्रभाव-

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रभावी कूटनीति की है, जिसके तहत गुटनिरपेक्ष रणनीति ने इसे वैश्विक मान्यता दिलाई है।
- 2023 में भारत कूटनीतिक संवादों में छठे स्थान पर रहा, जो बहुपक्षीय मंचों पर उसकी बढ़ती भागीदारी को दर्शाता है।
- भारत ने क्वाड (Quad) जैसी सुरक्षा पहलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे इसका क्षेत्रीय सुरक्षा तंत्र में योगदान और भी बढ़ गया है।

### • रक्षा सहयोग और आर्थिक पहुंच-

- भारत ने फिलीपींस के साथ ब्रह्मोस मिसाइल सौदा किया, जो इस क्षेत्र में उसकी रक्षा क्षमताओं और रक्षा निर्यात में बढ़ते कदमों का प्रतीक है।
- हालांकि भारत औपचारिक सैन्य गठबंधनों से दूर रहता है, परंतु उसने अपनी रक्षा नीति को मजबूत करने और निकटवर्ती देशों में अपनी शक्ति बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया है।

### • एशिया में भारत की भूमिका-

- भारत की बढ़ती आर्थिक और कूटनीतिक ताकत के साथ, उसे हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक प्रमुख शक्ति के रूप में देखा जा रहा है।
- एशिया पावर इंडेक्स ने भारत की बढ़ती शक्ति को दर्शाया है, और यह उम्मीद जताई गई है कि भारत भविष्य में अपने प्रभाव को और भी बढ़ाएगा।
- भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और बहुपक्षीय कूटनीति में उसकी भागीदारी इसे वैश्विक राजनीति में एक अहम देश बनाता है।

## प्रारंभिक परीक्षा के लिए तथ्य

### सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक

**चर्चा में क्यों?** उत्तराखंड सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक शुरू करने वाला पहला भारतीय राज्य बन गया है।

#### जीईपी सूचकांक के घटक:

जीईपी सूचकांक चार प्रमुख स्तंभों पर आधारित है: वायु, मिट्टी, पेड़ और पानी।

- ये स्तंभ पर्यावरण के आवश्यक घटकों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो पारिस्थितिक संतुलन और मानव कल्याण को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- जीईपी की गणना करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला सूत्र इस प्रकार है:

**जीईपी सूचकांक** = (वायु-जीईपी सूचकांक + जल-जीईपी सूचकांक + मिट्टी-जीईपी सूचकांक + वन-जीईपी सूचकांक)

यह सूत्र विभिन्न पर्यावरणीय कारकों को एक सूचकांक में एकीकृत करके पर्यावरण के समग्र स्वास्थ्य का व्यापक मूल्यांकन करने की अनुमति देता है।

#### वायु:

- जीईपी का वायु घटक वायु की गुणवत्ता और वायुमंडलीय स्वास्थ्य पर मानवीय गतिविधियों के प्रभाव का आकलन करता है।
- यह प्रदूषण के स्तर और उत्सर्जन को कम करने या प्राकृतिक या इंजीनियर प्रक्रियाओं के माध्यम से वायु शोधन को बढ़ाने के प्रयासों दोनों पर विचार करता है।

#### मिट्टी:

- जीईपी सूचकांक में मिट्टी का स्वास्थ्य एक महत्वपूर्ण संकेतक है।
- यह उर्वरता, संदूषण के स्तर और मिट्टी संरक्षण प्रथाओं जैसे कारकों पर विचार करते हुए मिट्टी की गुणवत्ता को मापता है।
- इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि मिट्टी उत्पादक बनी रहे और कृषि तथा प्राकृतिक वनस्पति को सहारा देने में सक्षम हो।

#### पेड़ (वन):

- जीईपी का वन घटक केवल पेड़ों की संख्या गिनने से कहीं आगे जाता है।
- यह लगाए गए पेड़ों के प्रकार, उनकी उत्तरजीविता दर और उनके पारिस्थितिक मूल्य का मूल्यांकन करता है।

- उदाहरण के लिए, चौड़ी पत्ती वाले पेड़, जो पर्यावरण के लिए अधिक लाभदायक होते हैं, उन्हें पाइन जैसी कम पसंदीदा प्रजातियों की तुलना में सूचकांक में अधिक महत्व दिया जाता है।
- यह दृष्टिकोण अधिक पारिस्थितिक रूप से मूल्यवान पेड़ों के रोपण को प्रोत्साहित करता है और टिकाऊ वन प्रबंधन प्रथाओं को सुनिश्चित करता है।

#### पानी:

- जल घटक प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों जल निकायों की जांच करता है, उनकी मात्रा और गुणवत्ता का आकलन करता है।
- इसमें जल संरक्षण प्रयासों का मूल्यांकन शामिल है, जैसे कि अमृत सरोवर जैसे मानव निर्मित जलाशयों का निर्माण, और उनकी तुलना वर्षा आधारित झीलों और नदियों जैसे प्राकृतिक जल स्रोतों से की जाती है।
- सूचकांक का उद्देश्य समग्र जल उपलब्धता और संरक्षण पहलों की प्रभावशीलता को दर्शाना है।

### ग्रीन टग ट्रांजिशन प्रोग्राम (GTTP)

**चर्चा में क्यों?** हाल ही में, केंद्रीय बंदरगाह नौवहन और जलमार्ग मंत्री ने ग्रीन टग ट्रांजिशन प्रोग्राम (GTTP) के लिए आधिकारिक तौर पर मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) लॉन्च की।

#### GTTP के बारे में:

- ग्रीन टग ट्रांजिशन प्रोग्राम एक पहल है जिसका उद्देश्य समुद्री गतिविधियों के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना है, विशेष रूप से टगबोट के डीकार्बोनाइजेशन पर ध्यान केंद्रित करना, जो बंदरगाह संचालन और समुद्री रसद के लिए आवश्यक हैं।
- टगबोट पारंपरिक रूप से डीजल इंजन पर निर्भर करते हैं, जो महत्वपूर्ण ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में योगदान करते हैं।
- ग्रीन टग ट्रांजिशन प्रोग्राम इन जहाजों को हाइब्रिड या पूरी तरह से इलेक्ट्रिक प्रोपल्शन सिस्टम जैसे अधिक टिकाऊ ऊर्जा स्रोतों में बदलने का प्रयास करता है।
- यह कार्यक्रम समुद्री क्षेत्र में ग्रीन शिपिंग को बढ़ावा देने और कार्बन उत्सर्जन को कम करने के व्यापक प्रयासों का हिस्सा है।
- इसमें आम तौर पर मौजूदा टगबोट को क्लीनर तकनीकों के साथ फिर से तैयार करना या स्थिरता को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किए गए नए टग बनाना शामिल है।
- इन पहलों को अक्सर सरकारी नीतियों, अंतर्राष्ट्रीय विनियमों और समुद्री उद्योगों और पर्यावरण संगठनों के बीच सहयोग द्वारा समर्थित किया जाता है।

#### मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) के बारे में:

- यह चरण-दर-चरण निर्देशों या दिशा-निर्देशों का एक सेट है जो किसी संगठन द्वारा श्रमिकों को नियमित संचालन करने में मदद करने के लिए बनाया जाता है। एसओपी का उद्देश्य विशिष्ट कार्यों के निष्पादन में स्थिरता, दक्षता,

गुणवत्ता और सुरक्षा सुनिश्चित करना है। इनका उपयोग विनिर्माण, स्वास्थ्य सेवा, सरकार और सेवा क्षेत्रों सहित विभिन्न उद्योगों में किया जाता है।

## टील कार्बन

राजस्थान के भरतपुर जिले में केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (केएनपी) में किए गए 'टील कार्बन' पर भारत के पहले अध्ययन ने जलवायु अनुकूलन और लचीलेपन की चुनौतियों का समाधान करने के लिए आर्द्रभूमि संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला है।

### इसके बारे में:

टील कार्बन जलीय पारिस्थितिकी तंत्रों में संग्रहीत कार्बन को संदर्भित करता है, विशेष रूप से झीलों, नदियों, आर्द्रभूमि और धाराओं जैसे मीठे पानी के निकायों में। यह अन्य प्रकार के कार्बन भंडारण का पूरक है जैसे:

**नीला कार्बन:** मैंग्रोव, नमक दलदल और समुद्री घास जैसे समुद्री और तटीय पारिस्थितिकी तंत्रों में पाया जाता है।

**हरा कार्बन:** स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्रों, मुख्य रूप से जंगलों और घास के मैदानों में संग्रहीत।

### टील कार्बन के बारे में मुख्य बिंदु:

- **कार्बन पृथक्करण:** जलीय पारिस्थितिकी तंत्र वायुमंडल से कार्बन को पकड़ और संग्रहीत कर सकते हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन को कम करने में मदद मिलती है।
- **कार्बन के स्रोत:** मृत पौधों की सामग्री और मिट्टी के कटाव जैसे कार्बनिक पदार्थ जो मीठे पानी के निकायों में प्रवेश करते हैं, कार्बन चक्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- **खतरे:** टील कार्बन भंडार प्रदूषण, नदियों पर बांध बनाने, भूमि उपयोग में परिवर्तन और जलवायु परिवर्तन के कारण खतरे में हैं, जिसके कारण संग्रहीत कार्बन वायुमंडल में फैल सकता है। महत्व: टील कार्बन की पहचान वैश्विक कार्बन चक्र में सभी जलीय पारिस्थितिकी तंत्रों की व्यापक भूमिका पर जोर देती है, न कि केवल समुद्री पारिस्थितिकी तंत्रों की।

## इंडस-एक्स शिखर सम्मेलन 2024

इंडस-एक्स शिखर सम्मेलन का तीसरा संस्करण हाल ही में संयुक्त राज्य अमेरिका में संपन्न हुआ, जो भारत और अमेरिका में संयुक्त रक्षा नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र की उन्नति में प्रगति को दर्शाता है।

### इंडस-एक्स शिखर सम्मेलन के बारे में:

- इंडस-एक्स शिखर सम्मेलन भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच एक द्विपक्षीय पहल है जिसका उद्देश्य रक्षा नवाचार सहयोग को बढ़ावा देना है।
- जून 2023 में लॉन्च किया गया, यह दोनों देशों के रक्षा, प्रौद्योगिकी और नवाचार क्षेत्रों के हितधारकों को रक्षा विनिर्माण, अनुसंधान और विकास, विशेष रूप से उभरती प्रौद्योगिकियों में सहयोग को मजबूत करने के लिए एक साथ लाता है।

**इंडस-एक्स शिखर सम्मेलन की मुख्य विशेषताएं:**

**उद्देश्य:** भारतीय और अमेरिकी रक्षा स्टार्टअप, सरकारी एजेंसियों और निजी उद्योगों के बीच साझेदारी के माध्यम से महत्वपूर्ण रक्षा प्रौद्योगिकियों के नवाचार और संयुक्त विकास को बढ़ावा देना।

**फोकस क्षेत्र:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, क्वांटम कंप्यूटिंग, ड्रोन और उन्नत सैन्य प्रणालियाँ।

**रणनीतिक महत्व:** भारत-अमेरिका के एक बड़े ढांचे का हिस्सा। रक्षा और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में आपसी हितों को आगे बढ़ाने के लिए स्थापित अमेरिका-भारत महत्वपूर्ण और उभरती हुई प्रौद्योगिकी पहल (आईसीईटी) के व्यापक छत्र के तहत रक्षा सहयोग।

**सरकारी भागीदारी:** अमेरिकी रक्षा विभाग और भारत के रक्षा मंत्रालय द्वारा आयोजित, अमेरिकी रक्षा नवाचार इकाई (डीआईयू) जैसी एजेंसियों और डीआरडीओ (रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन) जैसे भारतीय रक्षा निकायों के समर्थन से।

**उद्योग की भागीदारी:** शिखर सम्मेलन में दोनों देशों की प्रमुख रक्षा कंपनियों और स्टार्टअप की भागीदारी देखी गई, जिससे संयुक्त अनुसंधान, विनिर्माण और आपूर्ति श्रृंखला सहयोग को बढ़ावा मिला।

**रोजगार-संबंधी प्रोत्साहन (ईएलआई) योजना**

**चर्चा में क्यों?** श्रम और रोजगार मंत्री मनसुख मंडाविया ने हाल ही में कहा है कि उनका मंत्रालय जल्द ही बजट में घोषित रोजगार-संबंधी प्रोत्साहन (ईएलआई) योजना पर कैबिनेट नोट जारी करेगा।

**रोजगार-संबंधी प्रोत्साहन (ईएलआई) योजना के बारे में:**

- यह एक नीति तंत्र है जिसका उद्देश्य व्यवसायों और उद्योगों को रोजगार सृजन करने और वित्तीय या गैर-वित्तीय प्रोत्साहन देकर रोजगार को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करना है।
- ईएलआई कार्यक्रम आम तौर पर बेरोजगारी को दूर करने, श्रम-गहन उद्योगों का समर्थन करने और सरकारी सहायता को सीधे नई नौकरियों के सृजन से जोड़कर आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।

**रोजगार-संबंधी प्रोत्साहन (ईएलआई) योजनाओं की मुख्य विशेषताएं:**

- **रोजगार सृजन फोकस:** प्राथमिक उद्देश्य नियोक्ताओं को अधिक श्रमिकों को काम पर रखने के लिए प्रोत्साहित करना है, खासकर उन क्षेत्रों में जिनमें रोजगार सृजन की उच्च क्षमता है, जैसे विनिर्माण, बुनियादी ढांचा, आईटी, कपड़ा और कृषि।
- **वित्तीय प्रोत्साहन:** ईएलआई योजनाओं के तहत, व्यवसायों को प्रत्यक्ष वित्तीय सहायता या सब्सिडी मिल सकती है, जैसे कि वेतन सब्सिडी, कर छूट या मौद्रिक प्रोत्साहन के अन्य रूप। ये प्रोत्साहन आम तौर पर सृजित नई नौकरियों की संख्या से जुड़े होते हैं, और इनकी संख्या में वृद्धि नियुक्तियों की संख्या के आधार पर होती है।
- **कौशल और प्रशिक्षण सहायता:** कई ELI योजनाएँ व्यवसायों को कर्मचारी प्रशिक्षण और कौशल विकास में निवेश करने के लिए प्रोत्साहन भी प्रदान करती हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि नए कर्मचारी अपनी भूमिकाओं के लिए पर्याप्त रूप से तैयार हैं। यह कार्यबल की रोजगार क्षमता में सुधार करने के सरकार के व्यापक लक्ष्य के साथ संरेखित है।

- **लक्षित क्षेत्र:** ELI अक्सर अर्थव्यवस्था के उन विशिष्ट क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिनमें बड़ी संख्या में श्रमिकों को शामिल करने की क्षमता होती है। उदाहरण के लिए, विनिर्माण, निर्माण या कपड़ा जैसे श्रम-गहन उद्योगों को ELI योजना में प्राथमिकता दी जा सकती है।
- **रोज़गार की शर्तें:** प्रोत्साहन के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए, व्यवसायों को अक्सर कुछ शर्तों को पूरा करना होता है, जैसे कि उचित वेतन सुनिश्चित करना, औपचारिक अनुबंध प्रदान करना, श्रम कानूनों का पालन करना और दीर्घकालिक, स्थायी रोज़गार सृजित करना।
- **क्षेत्रीय फ़ोकस:** ELI योजनाएँ विशिष्ट क्षेत्रों या राज्यों पर भी ध्यान केंद्रित कर सकती हैं, विशेष रूप से वे जो आर्थिक रूप से पिछड़े हुए हैं या जिनकी बेरोज़गारी दर अधिक है। इससे रोज़गार के अवसरों में क्षेत्रीय असमानताओं को संतुलित करने में मदद मिलती है।

### भारत में ELI का उदाहरण:

भारत में, जबकि उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (PLI) योजनाएँ अधिक प्रमुख हैं, कुछ क्षेत्रीय पहलों में रोज़गार से जुड़े प्रोत्साहन के तत्व हैं। उदाहरण के लिए:

**आत्मनिर्भर भारत रोज़गार योजना (ABRY):** COVID-19 महामारी के दौरान शुरू की गई, ABRY का उद्देश्य व्यवसायों को नई नौकरियाँ बनाने और महामारी के दौरान अपनी नौकरी खो चुके श्रमिकों को फिर से काम पर रखने के लिए प्रोत्साहित करना था। इस योजना ने नए नियुक्त कर्मचारियों के लिए कर्मचारी भविष्य निधि (EPF) में नियोक्ता के योगदान के हिस्से को कवर करने के लिए सब्सिडी की पेशकश की।

**रोज़गार लिंकेज के साथ PLI:** हालाँकि मुख्य रूप से उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किया गया है, कपड़ा और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे क्षेत्रों के लिए कुछ PLI योजनाओं में रोज़गार से जुड़े प्रोत्साहन हैं। ऐसी कंपनियाँ जो उत्पादन क्षमता का विस्तार करती हैं और बदले में अधिक नौकरियाँ पैदा करती हैं, उन्हें अतिरिक्त लाभ मिल सकता है।

## इंडो-पैसिफिक आर्थिक ढांचा

**चर्चा में क्यों?** भारत ने काउ शिखर सम्मेलन के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तीन दिवसीय अमेरिकी यात्रा के दौरान स्वच्छ ऊर्जा, भ्रष्टाचार विरोधी और व्यापार पारदर्शिता पर ध्यान केंद्रित करते हुए इंडो-पैसिफिक आर्थिक ढांचे (आईपीईएफ) के तहत दो और समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं।

इन समझौतों का उद्देश्य एक "स्वच्छ" और "निष्पक्ष अर्थव्यवस्था" बनाना है, जिससे भारत के स्थिरता प्रयासों को बढ़ावा मिलने और अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, ब्रुनेई दारुस्सलाम, फिजी, इंडोनेशिया, जापान सहित अन्य आईपीईएफ सदस्यों के साथ इसके सहयोग को मजबूत करने की उम्मीद है।

### इंडो-पैसिफिक आर्थिक ढांचे के बारे में:

इसे 23 मई 2022 को टोक्यो में अमेरिका और अन्य इंडो-पैसिफिक देशों द्वारा लॉन्च किया गया था।

इस समूह में 14 भागीदार देश शामिल हैं: ऑस्ट्रेलिया, ब्रुनेई दारुस्सलाम, फिजी, इंडोनेशिया, जापान, कोरिया, मलेशिया, न्यूजीलैंड, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड और वियतनाम।

चार स्तंभों-व्यापार, आपूर्ति-श्रृंखला लचीलापन, स्वच्छ अर्थव्यवस्था और निष्पक्ष अर्थव्यवस्था- के इर्द-गिर्द संरचित आईपीईएफ का उद्देश्य इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में आर्थिक विकास और स्थिरता को बढ़ावा देना है।

## तृष्णा मिशन

**चर्चा में क्यों?** गगनयान और तृष्णा मिशन के लिए फ्रांस-भारत अंतरिक्ष सहयोग के 60 साल हाल ही में चर्चा में रहे।

- तृष्णा (उच्च-रिज़ॉल्यूशन प्राकृतिक संसाधन आकलन के लिए थर्मल इन्फ्रारेड इमेजिंग सैटेलाइट) भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) और फ्रांसीसी अंतरिक्ष एजेंसी (सीएनईएस) के बीच एक सहयोगी उपग्रह मिशन है।
- तृष्णा मिशन को वर्तमान में 2026 में लॉन्च करने की योजना है। यह मिशन भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) और फ्रांसीसी अंतरिक्ष एजेंसी (सीएनईएस) के बीच एक सहयोग है। उपग्रह को भारतीय ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी) द्वारा सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से लॉन्च किया जाएगा।

**तृष्णा मिशन की मुख्य विशेषताएं और उद्देश्य:**

**थर्मल इन्फ्रारेड इमेजिंग:**

- तृष्णा पृथ्वी की उच्च-रिज़ॉल्यूशन थर्मल इन्फ्रारेड छवियां प्रदान करेगा। ये छवियां अभूतपूर्व सटीकता के साथ सतह के तापमान को कैप्चर करेंगी, जिससे जल तनाव, सिंचाई, शहरी ऊष्मा द्वीपों और अन्य तापमान-संबंधी घटनाओं की विस्तृत निगरानी की जा सकेगी।

**सहयोग:**

- यह भारत और फ्रांस के बीच एक संयुक्त मिशन है, जिसमें ISRO उपग्रह प्लेटफॉर्म में योगदान दे रहा है और CNES थर्मल इन्फ्रारेड इमेजिंग उपकरण का प्रभार संभाल रहा है। यह साझेदारी मेघा-ट्रॉपिक्स और सरल सहित दो अंतरिक्ष एजेंसियों के बीच संयुक्त मिशनों के सफल इतिहास को जारी रखती है।

**अनुप्रयोग:**

- कृषि और जल प्रबंधन: तृष्णा की थर्मल इमेजिंग फसलों में पानी की खपत और तनाव को ट्रैक करने में मदद करेगी, जिससे बेहतर सिंचाई प्रबंधन और सूखे की स्थिति को समझने में मदद मिलेगी।

**शहरी नियोजन:** यह शहरी ताप द्वीपों पर डेटा प्रदान करेगा, जिससे शहर की योजना को बेहतर बनाने और हीटवेव के प्रभावों को कम करने में मदद मिलेगी।

**जलवायु परिवर्तन निगरानी:** उपग्रह का उपयोग वनस्पति, ग्लेशियरों और जल निकायों में परिवर्तन सहित ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव की निगरानी और मॉडल बनाने के लिए किया जाएगा।

**आपदा प्रबंधन:** तापमान में बदलाव की निगरानी करने की तृष्णा की क्षमता हीटवेव, जंगल की आग और अन्य तापमान-संचालित घटनाओं जैसी प्राकृतिक आपदाओं का पूर्वानुमान लगाने में मदद कर सकती है।

**उच्च-रिज़ॉल्यूशन और पुनरीक्षण समय:**

- TRISHNA उच्च स्थानिक रिज़ॉल्यूशन और उच्च **पुनरीक्षण आवृत्ति (संभवतः 3-4 दिन)** दोनों प्रदान करेगा, जिससे यह वैश्विक स्तर पर तापमान गतिशीलता और थर्मल पैटर्न को ट्रैक करने के लिए सबसे सक्षम मिशनों में से एक बन जाएगा।

#### अन्य मिशनों के पूरक:

- यह मिशन NASA के ECOSTRESS और **Sentinel-3** जैसे अन्य अंतरिक्ष-आधारित पृथ्वी अवलोकन उपग्रहों का पूरक होगा, जो अधिक लगातार और उच्च-रिज़ॉल्यूशन थर्मल डेटा प्रदान करके डेटा में अंतराल को भरेगा।

#### लॉन्च टाइमलाइन:

- TRISHNA मिशन को 2020 के मध्य तक लॉन्च किए जाने की उम्मीद है। इसरो अपने वर्कहॉर्स लॉन्च वाहनों में से एक का उपयोग करके लॉन्च के लिए जिम्मेदार होगा।

#### महत्व:

**जल संसाधन प्रबंधन:** जनसंख्या वृद्धि और जलवायु परिवर्तन के कारण जल संसाधनों पर बढ़ते तनाव को देखते हुए, TRISHNA वैश्विक जल निकायों और उनके थर्मल गुणों की निगरानी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

**जलवायु कार्रवाई:** ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों पर मूल्यवान डेटा प्रदान करके, यह जलवायु शमन और अनुकूलन रणनीतियों की दिशा में वैज्ञानिक प्रयासों का समर्थन करता है।

**सतत विकास:** तृष्णा वैश्विक सतत विकास लक्ष्यों के साथ संरेखित करते हुए कृषि पद्धतियों में सुधार, जल उपयोग को अनुकूलित करने और शहरी क्षेत्रों को अधिक टिकाऊ ढंग से डिजाइन करने के लिए कार्रवाई योग्य डेटा प्रदान करेगी।

### गार्पिया-3 (G3)

**चर्चा में क्यों?** एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि रूस और चीन यूक्रेन के खिलाफ लंबी दूरी के ड्रोन बनाने के लिए एक गुप्त हथियार कार्यक्रम में लगे हुए हैं।

रूसी सरकारी स्वामित्व वाली हथियार कंपनी अल्माज़-एंटे की सहायक कंपनी IEMZ कुपोल ने कथित तौर पर चीन में गार्पिया-3 (G3) नामक एक नया ड्रोन मॉडल विकसित किया है।

- G3 UAV **50 किलोग्राम** के पेलोड के साथ लगभग 1,243 मील (**2,000 किमी**) की यात्रा कर सकता है।

### फिलाडेल्फिया कॉरिडोर

फिलाडेल्फिया कॉरिडोर युद्ध विराम वार्ता में एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, क्योंकि गाजा पर इजरायल का युद्ध जारी है, जिसमें फिलिस्तीनियों की मृत्यु लगभग 41,000 हो चुकी है।



### फिलाडेल्फिया कॉरिडोर के बारे में-

- फिलाडेल्फिया कॉरिडोर गाजा-मिस्र सीमा के बीच एक रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण भूमि पट्टी है।
- इसकी लंबाई लगभग 14 किलोमीटर तथा चौड़ाई 100 मीटर है।
- यह क्षेत्र क्षेत्रीय सुरक्षा और गाजा, इजरायल और मिस्र के आसपास की भू-राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- यह उत्तर में भूमध्य सागर से लेकर दक्षिण में इजरायल के साथ केरेम शालोम क्रॉसिंग तक फैला हुआ है।
- इसमें राफा क्रॉसिंग भी शामिल है, जो गाजा और मिस्र के बीच मुख्य सीमा बिंदु है।
- यह मिस्र और गाजा के बीच एक बफर जोन के रूप में कार्य करता है, तथा इस पर नियंत्रण से क्षेत्र में सुरक्षा और तस्करी गतिविधियों पर प्रभाव पड़ता है।

\*\*\*\*\*